KNOWLEDGE IS POWER

शिक्षण, शोध एवं समाज...

रत्नांक

Ratnank

महाविद्यालय पत्रिका

अंक : नवम्, मार्च 2026

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

प्रधान संरक्षक : श्री अशोक पाटनी
संरक्षक : श्री सुरेश पाटनी
श्री विमल पाटनी
श्री महावीर कोठारी
CA सुभाष अग्रवाल
परामर्श : डॉ. शैलेन्द्र पाटनी (प्राचार्य)
श्री विश्वजीत जारोली (IQAC)
सम्पादक : डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
सह सम्पादक : डॉ. ज्योति शर्मा, कविता प्रियदर्शिनी
टंकण : नेहा शर्मा
मुद्रण एवं वितरण : अमित दाधीच
राजेश जैन

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज
अजमेर रोड़, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801,
दूरभाष : 01463-257000
ई-मेल : ratnank@rkgirlscollege.edu.in
वेब साइट : www.rkgirlscollege.edu.in

विषय	पृष्ठ
रत्नांक	02
अध्यक्ष संदेश	03
उपाध्यक्ष संदेश	04
वाईस चैयरमेन संदेश, सचिव संदेश	05-06
प्राचार्य संदेश	07
सम्पादकीय	08
जीवन सफलता के पंचमंत्र	09
राजतिलक-संकलन	10
एहसास की सीख : रामायण का अंश-संकलन	11
विज्ञान के समन्वय से सशक्त समाज का निर्माण	12
शिक्षा की भूमिका और भारतीय ज्ञान परंपरा	13
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और अनुसंधान में संभावनाएँ	14
जब एक स्त्री सोचती है तो इतिहास बदलता है	15
भारतीय ज्ञान -परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति : एक अध्ययन	16
आधुनिक शिक्षा और प्रबंधन का समाज पर प्रभाव	17
शिक्षा, ज्ञान, प्रेरणा व शोध शिक्षक से परिपूर्ण	18
अध्यापक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	19
नई शिक्षा नीति 2020 : समावेशी बदलाव की ओर	20
शिक्षा, अनुसंधान और समाजः एक समृद्ध श्रृंखला	21
शिक्षा का नवोदय	21
इतिहास शिक्षण - शोध एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान	22
हिन्दी भाषा शिक्षण और समाज	23
कर्ताभाव से दृष्टाभाव की ओर	24
ज्ञान से नवाचार तकः नई शिक्षा नीति 2020	25
शिक्षा समाज की आत्मा : सूचना प्रौद्योगिकी उसका आधुनिक...	26
भौतिक विज्ञान शिक्षण में आधुनिक....., बेटी का सफर	27
एक नयी उड़ान, तू बस तू ही रहना, समाज में शिक्षा प्रणाली	28
अच्छी शिक्षा, श्रेष्ठ समाज और उत्तम स्रोत, शिक्षण में....	29
नया संदेश, नया निर्माण, प्रारंभिक शिक्षा एवं शिक्षक के स्वरूप	30
शिक्षा की नीति, शिक्षक, रंगीलो राजस्थान	31
क्षमता आधारित शिक्षा से सफलता, एक अनोखी दोस्ती	32
वर्तमान में शिक्षा का महत्त्व	32
जीवन, शोध हिम्मत न हारने का संकल्प है	33
शिक्षण समाज निर्माण की आधाशिला, शिक्षण, शोध एवं....	34
English Article	35-39

एक शिक्षा स्वप्न

शिक्षा से जब कदम बढ़ेंगे, श्रेष्ठ बनेगा देश
बेटी हो या बेटा हो, मेरा यह सन्देश !

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस-पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं, स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्त्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्‌भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा'
को कोटि-कोटि नमन !

''रत्नांक''

'रत्नांक' शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अतः 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। ''रत्नांक'' शब्द में दो वर्णों यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महता प्रतिपादित है। इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है, साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। नवम् अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी सहित 'शिक्षण, शोध एवं समाज' को समर्पित है। अतः इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

संपादक

संदेश

'समाज' की प्रगतिशीलता में ज्ञान का महत्त्व अत्यंत स्वरूप में परिलक्षित है। प्राचीन काल से ही अज्ञान को अंधकार एवं ज्ञान को प्रकाश रूप में मानकर हमारे ऋषि मुनियों व तीर्थकरों ने समाज में ज्ञान रूपी प्रकाश का प्रचार प्रसार किया है। इसी फलस्वरूप आज मानव समाज प्रत्येक जीवों से बुद्धिमता की श्रेणी में अग्रगण्य है। यह परम्परा अनवरत रहे, इसी दिशा में हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रयत्नशील है।

समाज के अन्तर्गत ज्ञान राशि की संकल्पना को संजोकर लेखन के माध्यम से समृद्ध विचारों 'शिक्षण, शोध एवं समाज' रूपी शब्दपुंज 'रत्नांक' का यह नवम् अंक है जिसकी मुझे अपार प्रसन्नता है। 'रत्नांक' के इस नवम् अंक हेतु मैं महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, लेखकों, सम्पादक एवं सम्पूर्ण सम्पादन मण्डल को असीम बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

'शिक्षण' गुरू एवं शिष्य के जीवन में एक अत्यंत सारगर्भित पक्ष है। एक गुरू का यह निष्ठित दायित्व है कि वे अपने शिष्यों हेतु शिक्षण का वह रूप स्थापित करें जिससे ज्ञानार्थी सेवार्थी बनकर समाज के उत्थान व विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना प्रबल योगदान प्रदान कर सके। शिक्षण सदैव ज्ञान के साथ व्यावसायिक स्वरूप से युक्त होना चाहिए जिससे विद्यार्थी सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपनी शिक्षा ग्रहण कर भविष्य निर्माण की राह प्रशस्त करें।

शिक्षण के इन्हीं विस्तृत आयामों की आधारशिला से युक्त 'रत्नांक' का यह नवम् अंक शब्द संयोजन का अतुल्य प्रयत्न है । लेखन की इसी उत्कृष्टता हेतु मैं सम्पूर्ण सम्पादन मण्डल को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

सुरेश पाटनी
उपाध्यक्ष
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

'वर्तमान' शिक्षा प्रणाली में नवाचार समय की महत्ती आवश्यकता है क्योंकि हम इस पक्ष के प्रबल पक्षधर रहे हैं कि 'समय सदैव परिवर्तनशील है एवं परिवर्तन संसार का नियम है।' हर क्षेत्र एवं व्यवस्था में परिवर्तन न होने पर किसी भी कार्यप्रणाली की वैधता व्यवस्था पर प्रश्न उठने लगते हैं जिनके जवाब प्रसंगानूकूल नहीं रह जाते। अतः आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति युवाओं में कौशल ज्ञान व शोध के क्षेत्र में नवाचार स्थापित कर रही है जो प्रशंसनीय है।

इन्हीं विचारों को प्रतिपुष्टित स्वरूप में 'शिक्षण, शोध व समाज' आधारित ज्ञान आभा को प्रकाशित करने का विनम्र प्रयत्न महाविद्यालय पत्रिका 'रत्नांक' का यह नवम् अंक है। इस प्रकाशन के प्रयासों में श्रमसाधना कर रहे संपादक एवं संपादन मण्डल को बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

विमल पाटनी
वाईस चैयरमेन
वंडर सीमेन्ट लिमिटेड

संदेश

'शोध' का क्षेत्र, व्यापक, विस्तृत एवं अछोर है। वैदिक काल से अधुनातन संस्कृति के इस ए. आई. युग तक शोध के क्षेत्र में अंतरिक्ष से लेकर धरती के गर्भ तक की विकास यात्रा को हमने शोधात्मक दृष्टि से देखा है। धरती, अंबर, वायुमण्डल, ग्रह-नक्षत्र, ध्वनि, भाषा, साहित्य व समाज हर क्षेत्र में प्रतिदिन शोध के माध्यम से नवाचार प्रत्यक्षतः प्रमाण है। शोध के इन्हीं विचारों को प्रतिपुष्टित करता महाविद्यालय पत्रिका 'रत्नांक' का यह सारगर्भित विशेषांक अपने विचारात्मक कलेवर में सर्वसम्मुख है।

शिक्षण, शोध व समाज के संयुक्त स्वरूप में विचार आभा के प्रकाशपुंज 'रत्नांक' के इस नवम् अंक की मैं सम्पादक व सम्पूर्ण सम्पादन मण्डल को हृदय की अनंत गहराईयों से बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव
कॉलेज प्रबंधन समिति

संदेश

'शिक्षा' उन्नयन की दृष्टि से नई शिक्षा नीति में शिक्षाविदों व विद्वानों ने शिक्षण, शोध व समाज विषयक बिन्दुओं पर बल दिया है। विद्वानों का विचार है कि समाज की प्रगति में शिक्षण की उत्कृष्टता व शोध में नवाचार आवश्यक है। वर्तमान में समाज की विशिष्ट उपलब्धियाँ इन्हीं विन्दुओं का सारगर्भित संचय है। हमारा प्रयास है प्रत्येक विद्यार्थी व शिक्षक नई शिक्षा नीति के इस मूल मन्थन से जुड़कर अपने आलेख के माध्यम से विचारों को साझा करे जिससे उनके विचार समाज हेतु प्रतिफलित हो सके।

'रत्नांक' पत्रिका की अनवरत सम्पादन यात्रा में यह नवम् अंक शिक्षण, शोध एवं समाज आधारित विशेषांक के रूप में पाठकों के सम्मुख प्रेषित है। इस हेतु मैं अपने महाविद्यालय परिवार व सम्पादन मण्डल को बधाई व शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी
प्राचार्य

सम्पादकीय

'भारतीय' सभ्यता एवं संस्कृति में शिक्षा व ज्ञान की दृष्टि से वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत व गीता को आधार मानकर ही हमने विकास की राह प्रशस्त की है। इस सृष्टि के निर्माण के पश्चात् इस सृष्टि का संचालन कैसे होगा? यह तय करने के लिए विधान आवश्यक था। इस विधान में ब्रह्मा, विष्णु, महेश के योगदान पश्चात् ऋषि मुनियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया जिसे 'गुरूकुल' नाम देते हुए समाज में शिक्षा का विधान प्रदान किया। शिक्षा प्रदाता 'गुरू' व शिक्षा प्राप्तकर्ता शिष्य के रूप में उदित हुए। इन दोनों के मध्य ज्ञान का विचार विनिमय क्या होगा? इस बात को पुष्ट करने के लिए पाठ्यक्रम की दृष्टि से समाज उत्थान हेतु धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को आधार बनाया गया जो सनातन संस्कृति से हमारी शिक्षण व्यवस्था या परम्परा रही है।

यह चार पुरूषार्थ मानव जीवन में आवश्यक है इसलिए इन्हीं के इर्द-गिर्द रहकर ज्ञान, ध्यान, अध्यात्म, कर्त्तव्य, अधिकार, अनुशासन, प्रकृति, ब्रह्माण्ड, ज्योतिष, ग्रह, नक्षत्र, कौशल सहित जीवन की विविध कलाओं को सीखना व जानना आवश्यक है। सनातन संस्कृति में ज्ञान के इन्हीं आयामों से आगे बढ़ते हुए भारत विश्व में अपना परचम फहरा रहा था परंतु अत्याधुनिकता का परिवेश पाकर हमने शिक्षण की पद्धतियों को बदला जिससे पुरूषार्थ नहीं केवल आजीविका मात्र या नौकरी मात्र का प्रयत्न हो गया। यह प्रयत्न हमें संस्कारों व संस्कृति से दूर कर रहा है जिससे हम हमारे ज्ञान को ही विस्मृत कर रहे हैं। बस इन्हीं विचारों की पुष्टि संवर्द्धन हेतु 'रत्नांक' का यह अंक 'शिक्षण, शोध व समाज' केन्द्रित है। इसमें हमारे शिक्षण, शिक्षण से शोध व शोध से समाज से युक्त सारगर्भित विचार समावेशित है जो पाठकों तक विशिष्ट संदेश प्रेषित कर शिक्षा नीति 2020 की सार्थकता को सिद्ध करेगा।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
सम्पादक
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

जीवन सफलता के पंचमंत्र

'भगवद्गीता' के उपदेशों में जीवन की सफलता के अनेक मूल मंत्र है। एक ऐसा ही उदाहरण है कि महाभारत युद्ध में महायोद्धा अर्जुन जब अपने परिजनों को युद्ध भूमि में अपने समक्ष देखते हैं तो उनका मन युद्ध भूमि से विचलित होने लगता है एवं श्री कृष्ण को कहते हैं कि 'हे केशव !' मैं युद्ध नहीं लड़ सकता तब श्री कृष्ण अर्जुन को जीवन में आई विषम परिस्थितियों पर ज्ञान उपदेश देते हुए कहते हैं कि मनुष्य यदि अपने लक्ष्य के प्रति सजग, अटल व निष्ठित रहता है तो अवश्य वह जीवन यात्रा में सफलता अर्जित करता है।

इन्हीं विचारों को आत्मसात् करते हुए विद्यार्थियों को जीवन की सफलता के 'पंचमंत्र' मेरे मानस पटल में प्रस्फुटित है जिन्हें साझा करते हुए प्रयास है कि आप इन्हें जीवन में उतार कर स्वयं एवं समाज को गौरवांवित करें। यह 'पंचमंत्र' इस प्रकार से स्पष्ट हैं। प्रथम - एक विद्यार्थी को जीवन में लक्ष्य स्वप्न अवश्य देखना चाहिए जिससे वह हर दिन उसके निमित्त कार्य करे। दूसरा - प्रत्येक सफलता के मूल में एक श्रेष्ठ मार्गदर्शन होता है। विद्यार्थी को श्रेष्ठ मार्गदर्शक का सान्निध्य प्राप्त करना चाहिए। तीसरा - अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा व ईमानदारी रखनी चाहिए एवं अध्ययन अनुशासन से स्वयं को जोड़कर रखना चाहिए। चौथा - सफलता हमेशा धैर्य व संयम मांगती है एक विद्यार्थी के जीवन में चाहे कितना भी कठिन समय आये अर्थात् चाहे कितनी भी असफलता राहों में आये उसे सफल होने तक घबराना नहीं चाहिए। उसे धैर्य व संयम के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। पाँचवा - जब अथक प्रयासों से लक्ष्य की प्राप्ति हो जाये तब एक विद्यार्थी को अहंकार शून्य हो जाना चाहिए। अहंकार शून्य व्यक्ति ही श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकता है।

अतः सफलता के मूल में लक्ष्य स्वप्न, श्रेष्ठ मार्गदर्शन, अध्ययन अनुशासन, धैर्य-संयम व अहंकार शून्य यह 'पंचमंत्र' आवश्यक है। इन्हीं पंचमंत्रों का अनुसरण करते हुए एक विद्यार्थी व साधक को अपने लक्ष्य तक पहुँचने का माध्यम बनाना चाहिए।

महावीर कोठारी
कोषाध्यक्ष, कॉलेज प्रबंधन समिति

राजतिलक

एक मारवाड़ी को घूमने फिरने का बहुत शौक था। वह घूमते घूमते एक दिन ऐसे राज्य में चला गया जहाँ हर 5 वर्षों में नया राजा चुना जाता था। उस राज्य में राजा के चुनाव हेतु एक परम्परा थी कि हाथी अपनी सूंड में माला लेकर आता और भीड़ में खड़े लोगों में से जिसके गले में भी वह माला डालता उसे राजा मान लिया जाता था। इस बार हाथी ने उस घूमने फिरने वाले मारवाड़ी के गले में माला डाल दी एवं सबने मारवाड़ी को राजा घोषित कर दिया। मारवाड़ी ने सोचा कि मैं कहाँ फँस गया!

राजपुरोहित ने राजतिलक करते-करते कुछ शर्तें सुनाना प्रारम्भ किया व बताया कि भैया तुम्हें आज से 5 वर्ष के लिए राजा बना रहे हैं, पर 5 वर्ष के बाद आपको यहाँ से सैंकड़ों किलोमीटर दूर एक उफ़नती नदी है जिसमें बहुत सारे मगरमच्छ और बहुत सारे घड़ियाल हैं। वहाँ से वापस आने नहीं दिया जाएगा अगर वह नदी पार कर ली तो पीछे बहुत बड़ा जंगल है, वहाँ बहुत सारे शेर, चीते हैं फिर तुम जानो और तुम्हारी किस्मत! पूर्व में सभी राजाओं ने यह मान लिया था कि वे पाँच साल के लिए राजा है एवं बाद में तो नदी या मगरमच्छ के माध्यम से मरना तय है। इसलिए वे पाँच साल तक भोग विलास में डूबे रहते थे। परन्तु मारवाड़ी बहुत चतुर एवं दूरदर्शी था। उसने सोचा कि जिन 5 वर्षों के लिए राजा बना हूँ, उसमें मुझे आमजन की भलाई के कार्य करने चाहिए। इसी सोच के साथ प्रतिवर्ष अपने राज्य की 50 प्रतिशत आय आमजन के लिए खर्च करते हुए पहले वर्ष में उसने नदी पर पुल निर्माण किया, दूसरे वर्ष आस पास की जमीन को जंगल से मुक्त कर कृषि योग्य बनाया, तीसरे वर्ष में सड़क व सड़क के इर्द-गिर्द मौहल्लों निर्माण, चौथे वर्ष अपने लिए एक विशाल सुन्दर महल बनवाया एवं पाँचवें वर्ष में जीवनभर की आवश्यकता अनुरूप धन को इकट्ठा कर लिया। अब राजा के पाँच वर्ष पूरे हो रहे थे। राज्य के लोग राजा के जन कल्याणकारी कार्यों से बहुत खुश थे परन्तु उनकी आँखों में निरंतर आँसू रहते थे कि पूर्ववर्ती राजाओं की भाँति यह राजा भी मत्यु को प्राप्त हो जाएगें परन्तु समय पूर्ण होने पर राजा हँसी खुशी के साथ उस पुल पर चढ़ गया था जिस नदी में मगरमच्छ रहा करते थे एवं जिस राजा को मगरमच्छ के मुख का निवाला बनना था, परन्तु वह उस सुन्दर महल में रहने लग गया जिसे उसने दूरदर्शी सोच के माध्यम से बनवाया था।

सोचिए उस राजा ने सीमित समय में अपनी विशाल सोच के माध्यम से जन कल्याण के कार्य तो किये ही स्वयं अपने जीवन का प्रबंध करते हुए अन्य राजाओं की भाँति स्वयं को मौत के मुँह में जाने से रोक लिया एवं एक सीख प्रदान कर गया कि कम समय में भी जीवन को व्यवस्थित रूप प्रदान किया जा सकता है।

यह कहानी यह सीखाती है कि अच्छे कार्यों का पुल बनाना चाहिए जिससे जीवन की समस्याओं को पार किया जा सकता है। ज़िंदगी बस यही सिखाती है कि जितने लोगों की हेल्प हो सकती है हेल्प करनी चाहिए।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
निदेशक एवं सचिव

एहसास की सीख : रामायण का अंश

श्री राम, लक्ष्मण एवं सीता मैया चित्रकूट पर्वत की ओर जा रहे थे, राह बहुत पथरीली और कंटीली थी कि अचानक श्री राम के चरणों में काँटा चुभ गया।

श्री राम क्रोधित नहीं हुए बल्कि हाथ जोड़कर धरती माता से अनुरोध करने लगे :-

बोले - माँ, मेरी आपसे एक विनम्र प्रार्थना है, क्या आप मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करेंगी?

धरती बोली - ''प्रभु प्रार्थना नहीं, आप आज्ञा दीजिए।''

प्रभु बोले, ''माँ, मेरी बस यही विनती है कि जब भरत मेरी खोज में इस पथ से गुजरे तो आप फूलों जैसी नरम हो जाना। कुछ पल के लिए अपने आँचल के ये पत्थर और काँटे छुपा लेना। मुझे काँटा चुभा सो चुभा पर मेरे भरत के पाँव में आघात मत करना।'' श्री राम को यूँ परेशान देखकर धरती माता स्वयं दंग रह गई।

उन्होंने पूछा - भगवान, धृष्टता क्षमा हो, पर क्या भरत आपसे अधिक सुकुमार (कोमल) हैं?

''जब आप इतनी सहजता से सब सहन कर गए तो क्या कुमार भरत सहन नहीं कर पाएगें? फिर उनको लेकर आपके चित्त में ऐसी व्याकुलता एवं व्यथा क्यों है?

श्री राम बोले - '' नहीं .... नहीं..., नहीं माते, आप मेरे कहने का अभिप्राय नहीं समझीं!

मेरी व्यथा यह है कि भरत को यदि काँटा चुभा तो वह उसके पाँव को नहीं बल्कि उसके हृदय को दु:खी कर देगा!''

'' हृदय दु:खी!! ऐसा क्यों प्रभु ?'' धरती माँ जिज्ञासा भरे स्वर में बोली!

श्रीराम बोले - भरत का हृदय इतना कोमल है कि वह सबके कष्ट व पीड़ा को हृदय से महसूस करता है। चलते वक्त यदि कोई काँटा उसके पाँव में चुभ गया तो उस काँटे का दर्द अपने पाँव में महसूस न करके वह हृदय में महसूस कर लेगा। भरत को लगेगा कि जब उसके बड़े भाई राम इस रास्ते से गुजरे होंगे, तब इस काँटे का कितना भारी दर्द उन्होंने सहा होगा।

अतः जब भरत आए तब आप उसे काँटा मत चुभने देना। रामायण काल का यह प्रसंग भाई के प्रेम का असीमित उदाहरण है।

जयश्री अग्रवाल
सदस्य, प्रबंधन समिति

विज्ञान के समन्वय से सशक्त समाज का निर्माण

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसकी शिक्षा प्रणाली की गहराई और प्रासंगिकता पर निर्भर करती है। भारत जो सदियों तक 'विश्वगुरु' के रूप में प्रतिष्ठित रहा आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से अपनी उस खोई हुई विरासत को आधुनिक संदर्भो में पुनर्जीवित कर रहा है। यह केवल अतीत का गुणगान नहीं है बल्कि शिक्षण, शोध और विज्ञान के समन्वय से एक ऐसे सशक्त समाज के निर्माण का ब्लूप्रिंट है जो अपनी जड़ों से जुड़ा हो और जिसकी नजरें भविष्य के क्षितिज पर हों।

शिक्षण : प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में कला और विज्ञान के बीच कोई दीवार नहीं थी। आज के उच्च शिक्षा संस्थान इसी मॉडल को अपना रहे हैं। मातृभाषा और सामाजिक समावेश विज्ञान और तकनीकी विषयों को क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाना केवल भाषा का चुनाव नहीं बल्कि समाज के उस बड़े वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ना है जो भाषाई बाधा के कारण पीछे छूट गया था। अब शिक्षक व शिक्षण विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्नशील है।

विज्ञान: तर्क, तथ्य और परंपरा संगम का आधार पूर्णतः वैज्ञानिक है। भारतीय परंपराएं अंधविश्वास नहीं बल्कि सूक्ष्म वैज्ञानिक प्रेक्षणों का परिणाम हैं।

प्राचीन विज्ञान का आधुनिक अनुप्रयोग: शून्य (0) और दशमलव से लेकर आयुर्वेद के 'त्रिदोष' सिद्धांत तक भारतीय विज्ञान ने हमेशा समग्र कल्याण की बात की है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान अब पर्सनलाइज्ड मेडिसिन की बात कर रहा है जिसका आधार आयुर्वेद में 'प्रकृति' के रूप में हजारों वर्षो से मौजूद है।

धातु विज्ञान और वास्तु: महरौली का लौह स्तंभ आज भी जंग-मुक्त खड़ा है, जो हमारे पूर्वजों के उन्नत धातु विज्ञान का प्रमाण है। इन तकनीकों को आधुनिक इंजीनियरिंग शोध के साथ जोड़ना समाज को टिकाऊ और सस्ती तकनीकें प्रदान कर सकता है।

पर्यावरण और विज्ञान: भारतीय जीवन पद्धति में पंचमहाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश का सम्मान ही आज का इकोलॉजी है। इसे विज्ञान के साथ जोड़कर हम जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक समस्याओं का स्वदेशी समाधान दे सकते हैं।

आत्मनिर्भरता: जब शिक्षा छात्र को उसकी जड़ों के हुनर जैसे-स्थानीय शिल्प, कृषि तकनीक और आधुनिक प्रबंधन दोनों सिखाती है तो वह नौकरी मांगने वाला नहीं बल्कि रोजगार पैदा करने वाला बनता है।

सामाजिक नैतिकता: भारतीय ज्ञान परम्परा में वसुधैव कुटुंबकम और परहित सरिस धरम नहिं भाई जैसे मूल्य निहित हैं। विज्ञान जब इन मूल्यों के साथ जुड़ता है तो वह परमाणु बम नहीं, बल्कि मानवता के लिए ऊर्जा बनाता है।

सांस्कृतिक गौरव: अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ समाज ही आत्मसम्मान के साथ विश्व पटल पर खड़ा हो सकता है। यह गौरव ही समाज को मानसिक गुलामी से मुक्त कर एक नये भारत का निर्माण करेगा।

उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए 5-सूत्रीय रोडमैप

क्रेडिट बैंक: भारतीय ज्ञान परम्परा के पाठ्यक्रमों को मुख्य विषयों के बराबर क्रेडिट प्रदान करना।

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस: समाज के पारंपरिक विशेषज्ञों -कारीगरों, वैद्यों को शिक्षण से जोड़ना।

डिजिटल रिपॉजिटरी: स्थानीय ज्ञान और प्राचीन पांडुलिपियों का आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से डिजिटलीकरण।

प्रयोगशाला विकास: भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित शोध के लिए समर्पित लैब की स्थापना।

सामुदायिक आउटरीच: छात्रों का समाज के साथ सीधा संवाद ताकि वे वास्तविक समस्याओं पर शोध कर सकें।

जब शिक्षण में भारतीयता होगी, शोध में वैज्ञानिक कठोरता होगी और विज्ञान में सामाजिक सरोकार होगा तभी भारत एक सशक्त समाज के रूप में उभरेगा। यही वह मार्ग है जो भारत को पुनः विश्वगुरु पद पर आसीन करेगा।

डॉ. विश्वजीत जारोली
विभागाध्यक्ष, प्राणीशास्त्र विभाग

शिक्षा की भूमिका और भारतीय ज्ञान परंपरा

"सा विद्या या विमुक्तये।"- आदि शंकराचार्य - भारतीय सभ्यता में शिक्षा केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं रही बल्कि यह व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का आधार रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों में विकसित हुई ऐसी समृद्ध परंपरा है जिसमें दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, साहित्य, कला और शासन व्यवस्था से संबंधित ज्ञान शामिल है। शिक्षा ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का प्रमुख केन्द्र बिन्दु रही है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल के व्यवस्थाओं के अनुरूप समझा जा सकता है।

1. प्राचीन काल में शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास था। उस समय गुरुकुल प्रणाली प्रचलित थी जिसमें वेद, पुराण, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, वास्तुशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे ज्ञान क्षेत्रों का विकास हुआ जिसने समाज को विभिन्न दृष्टि से दिशा प्रदान की। इसी परंपरा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय ने आगे बढ़ाया जिसका प्रभाव धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि दर्शन में परिलक्षित है।

2. मध्यकाल में शिक्षा और ज्ञान परंपरा

मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली में कई परिवर्तन दृष्टिगोचर है जिसमें जहाँ एक ओर हिन्दू धर्म और मन्दिर में पूजा, अर्चना व ज्ञान परंपरा से युक्त अध्ययन था वहीं दूसरी ओर देश में आए दूसरे धर्मो के राजा-महाराजाओं द्वारा मदरसे जैसे शिक्षा स्थलों की नींव रख दी गई। एक तरफ जहाँ वैदिक संस्कृत एवं संस्कृत जैसी भाषाओं में अध्ययन हो रहा था वहीं दूसरी और अरबी, फारसी व उर्दू ने पाँव पसारना प्रारम्भ कर दिया। ज्ञान परंपरा में साधु एवं संतों के साथ-साथ सूफियों ने अपने धर्म के प्रति आमजन को जोड़ना प्रारम्भ कर दिया।

3. आधुनिक काल में शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा

आधुनिक काल में शिक्षा प्रणाली पर पश्चिमी प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से थॉमस बेबिंगटन मैकाले की शिक्षा नीति के कारण अंग्रेजी माध्यम और पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ावा मिला। फिर भी स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधी जैसे भारतीय विचारकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

4. भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य आधारित शिक्षा

भारतीय शिक्षा परंपरा में धर्म, नैतिकता, सहिष्णुता और मानवता को अत्यंत महत्त्व दिया गया। "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सिद्धांतों पर समाज सद्भावना की ओर आगे बढ़ रहा था जिससे व्यक्ति केवल ज्ञानवान ही नहीं बल्कि जिम्मेदार नागरिक भी बन सके।

5. पर्यावरण और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को अत्यंत पवित्र माना गया है। वृक्ष, नदियाँ और पर्वतों को सम्मान देने की परंपरा ने पर्यावरण संरक्षण की भावना को बढ़ावा दिया।

अतः स्पष्ट है प्राचीन काल के गुरुकुल और विश्वविद्यालयों से लेकर आधुनिक शिक्षा नीतियों तक शिक्षा ने भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवित रखा है। यदि शिक्षा में इस परंपरा को संतुलित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शामिल किया जाए तो यह न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करेगी बल्कि वैश्विक ज्ञान को भी समृद्ध बनाएगी।

डॉ. रूचि मिश्रा
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और अनुसंधान में संभावनाएँ

भारत की शैक्षिक संरचना के गतिशील परिदृश्य में शिक्षण और अनुसंधान दो ऐसे आधारभूत स्तंभ हैं जो राष्ट्र की वैश्विक उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। वर्ष 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक व्यापक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो बहु-विषयक शिक्षा और विविध विषयों में सशक्त अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र के विकास की दिशा में अग्रसर है। यह दूरदर्शी नीति न केवल शैक्षणिक मानकों को ऊँचा उठाने का लक्ष्य रखती है बल्कि भारत को ज्ञान सृजन और उसके अनुप्रयोग में अग्रणी बनाने का भी उद्देश्य रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की प्राचीन शिक्षण परंपरा की गौरवशाली विरासत को रेखांकित करती है जिसमें तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र शामिल हैं। नीति प्रमुख विद्वानों विशेषतः चरक, आर्यभट्ट और पाणिनि का जिक्र करते हुए बताती है कि इनके प्रयासों ने एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी है जो आज भी सभी को प्रेरणा देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय भाषाओं, कला, संस्कृति और तुलनात्मक अध्ययन सहित विभिन्न क्षेत्रों में समग्र वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह पहल अनुसंधान के अवसरों को लोकतांत्रिक बनाने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। इसके अतिरिक्त, नीति विश्वविद्यालयों में शिक्षण और अनुसंधान के एकीकरण पर बल देती है, जिससे शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार के साथ एक ऐसे वातावरण का निर्माण पर जोर दिया गया है जो सामाजिक चुनौतियों के समाधान हेतु उन्नत अनुसंधान को प्रोत्साहित करे। यह दृष्टिकोण पारंपरिक विषयगत सीमाओं को पार कर समग्र अधिगम को बढ़ावा देता है, जिससे विद्यार्थी जटिल वास्तविक समस्याओं का समाधान प्रभावी रूप से कर सके। यह नीति शिक्षण प्रक्रियाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन जैसी उन्नत तकनीकों के एकीकरण के महत्व को स्वीकार करती है। राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी फोरम जैसी पहलें सहयोग और अनुसंधान को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जिससे भारत नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी बन सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारत का अनुसंधान व्यय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 0.69 प्रतिशत है, जो अमेरिका, इज़राइल और दक्षिण कोरिया जैसे देशों की तुलना में काफी कम है। नीति अनुसंधान को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देती है, विशेष रूप से यह सामाजिक विज्ञान, मानविकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित के बीच सेतु का कार्य कर अंतःविषय दृष्टिकोण के विकास पर जोर देती है। यह अंतःविषय अनुसंधान स्वच्छ जल, ऊर्जा, स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता जैसी वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए अत्यंत आवश्यक है। नीति सुझाती है फड अनुसंधान केन्द्रित भविष्य के निर्माण के लिए शिक्षा जगत, सरकार और उद्योग के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। यह बताती है कि बहु-विषयक शिक्षा को अपनाकर, अनुसंधान उत्कृष्टता की संस्कृति विकसित कर, और तकनीकी व अंतरराष्ट्रीय सहयोग का लाभ उठाकर भारत ज्ञान सृजन और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग में वैश्विक नेतृत्व स्थापित कर सकता है।

21वीं सदी की जटिलताओं के बीच अनुसंधान और शिक्षा में निवेश की आवश्यकता पहले से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। यह आवश्यक है कि समाज के सभी स्तरों-शैक्षणिक संस्थानों, नीति-निर्माताओं और आम नागरिकों-में अनुसंधान की सोच विकसित की जाए। इसके लिए न केवल वित्तीय संसाधनों में वृद्धि आवश्यक है, बल्कि ऐसा वातावरण भी तैयार करना होगा जो जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और सहयोग को प्रोत्साहित कर सके। आगे आने वाले समय में बहु-विषयक शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय,भारतीय अनुवाद एवं विवेचना संस्थान तथा राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन जैसी संस्थाएँ भारत में नवाचार के केंद्र बनेंगे और भारत की समृद्ध बौद्धिक परंपरा को सशक्त करेंगे।

सारांशतः एक ऐसे भविष्य की कल्पना कीजिए जहाँ भारतीय विश्वविद्यालय रचनात्मकता और नवाचार के जीवंत केंद्र हो, जहाँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मानविकी और कला में अनुसन्धान समाज की प्रगति को गति दे।

डॉ. मितेश जुनेजा
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

जब एक स्त्री सोचती है तो इतिहास बदलता है

एक प्रश्न से आरम्भ होती है प्रत्येक क्रांति। यह प्रश्न है क्यों? यह एक लघु किन्तु असाधारण शब्द, जब किसी स्त्री की वाणी पर आता है तो सभ्यताओं की दिशा परिवर्तित हो जाती है। विचार कीजिए जब मैरी क्यूरी ने प्रथम बार प्रयोगशाला की देहरी पर पैर रखा तो उन्हें यह बताया गया कि यह स्थान स्त्रियों के लिए नहीं है। परन्तु उन्होंने न केवल वहाँ कार्य किया अपितु दो भिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में दो बार नोबेल पुरस्कार अर्जित किये। एक ऐसा कीर्तिमान जो आज तक अटूट है तो प्रश्न यह नहीं कि स्त्री शोध कर सकती है अथवा नहीं प्रश्न यह है कि जब वह शोध करती है तो संसार पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है?

सदियों से एक विचित्र और पीड़ादायक परम्परा चली आ रही थी। बालिकाओं को ग्रन्थ तो दिए गए किन्तु जिज्ञासा की स्वतन्त्रता नहीं दी गई। उन्हें शिक्षित किया गया परन्तु चिन्तन-मनन से विरक्त रखा गया। शिक्षा एक अलंकार बनकर रह गई प्रदर्शन के निमित्त, जीवन-परिवर्तन के निमित्त नहीं। किन्तु जिज्ञासा का दमन सम्भव नहीं होता। वह एक नदी के समान होती है मार्ग न मिले तो नवीन मार्ग का सृजन कर लेती है। यही जिज्ञासा शोध की जननी है और यही जिज्ञासा स्त्री के भीतर अनादि काल से प्रज्वलित रही है।

शोध एक गहन प्रक्रिया है जहाँ प्रत्येक क्यों? में एक क्योंकि की खोज की जाती है, जहाँ अनिश्चितता को स्वीकार करने का साहस और सत्य तक पहुँचने की अभिलाषा एक साथ विद्यमान रहती है। इस अन्वेषण की यात्रा में स्त्री की दृष्टि अतुलनीय है। जब एक महिला शोधकर्ता पर्यावरण का अध्ययन करती है तो वह केवल उपग्रह-चित्रों का विश्लेषण नहीं करती बल्कि वह उस माता को भी स्मरण रखती है जो प्रदूषित जलाशय का जल पीने को विवश है। जब वह नगरीकरण की प्रक्रिया का परीक्षण करती है तो वह मानचित्र पर रंग भरने के साथ-साथ उन परिवारों की व्यथा भी अनुभव करती है जिनका अस्तित्व उस परिवर्तन की भेंट चढ़ गया। यही संवेदनशीलता और वैज्ञानिकता का अद्वितीय संयोग शोध को मानव-कल्याण का माध्यम बनाता है।

शिक्षा एक ऐसा बीज है जो पाषाण को भी विदीर्ण कर अंकुरित होता है। नेल्सन मंडेला के वचन हैं-''शिक्षा वह सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्र है जिससे संसार को परिवर्तित किया जा सकता है।'' किन्तु जब यह अस्त्र किसी स्त्री के कर-कमलों में आता है तो वह न केवल अपना भाग्य-लेख बदलती है अपितु आने वाली पीढ़ियों की नियति का भी पुनर्लेखन करती है। राजस्थान की रजत-रेणु से सुशोभित इस धरती पर जहाँ कभी अवरोध की अभेद्य दीवारें थी आज अनगिनत नारियाँ प्रशासनिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक और शोध के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप अंकित कर रही हैं। यह परिवर्तन किसी आकस्मिक चमत्कार का परिणाम नहीं बल्कि यह एक-एक पृष्ठ के अध्ययन से एक-एक साहसिक प्रश्न से, एक-एक दृढ़ निश्चय से संचित हुआ है।

अतः यदि आप एक शोधार्थी हैं तो अन्वेषण कीजिए किन्तु सुनिश्चित उद्देश्य और सामाजिक दायित्वबोध के साथ। यदि आप एक विद्यार्थी हैं तो अध्ययन कीजिए किन्तु परीक्षा-उत्तीर्णता के संकुचित लक्ष्य से नहीं, वरन् इस चेतना के साथ कि ज्ञान वह अमूल्य सम्पदा है जो न अग्नि में भस्म होती है, न कोई छीन सकता है और यदि आप एक स्त्री हैं तो जानिए कि आपकी जिज्ञासा, आपका शोध, आपकी शिक्षा और आपका साहस, यह इस सभ्यता की आवश्यकता है। इतिहास उन्होंने नहीं रचा जिन्होंने उत्तर दिए इतिहास उन्होंने रचा जिन्होंने सही प्रश्न पूछने का साहस किया।

अतः पूछिए। खोजिए, क्योंकि खोजना ही शोध है।

डॉ. रोहिणी यादावार
विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग

भारतीय ज्ञान-परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति : एक अध्ययन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा विरासत में मिली वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो हजारों सालों में पूर्वजों द्वारा संश्लिष्ट की गयी है। यह ज्ञान प्रणाली वेदों, पुराणों, उपनिषदों जैसे प्राचीन ग्रंथों में निहित है। प्राचीन भारतीय ज्ञान और सनातन विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्यों की ओर अग्रगण्य है। विश्व कल्याण एवं मानव के उद्धार हेतु ज्ञान का विकास करना ही वैदिक कालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। भारतीय ज्ञान और परंपरा के आलोक में तैयार किया गया नवीन पाठ्यक्रम शिक्षा व्यवस्था द्वारा भारत के समृद्धशाली सांस्कृतिक विरासत को आने वाले पीढ़ियों के लिए सहेजकर व संरक्षित रखने का कार्य करेगा। "हमारे भारतीय ज्ञान और परंपरा में चरक, सुश्रुत, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट वराहमिहिर, चाणक्य, ब्रह्मगुप्त, चक्रपाणि दत्ता, पाणिनि, पंतजलि, माधव, नागार्जुन, गौतम, शंकरदेव, पिंगला, मैत्रेयी, गार्गी, मीरा और तिरुवल्लुवार जैसे अनेकों महान विद्वानों का उल्लेख मिलता है। वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्र खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, गणित, शल्य चिकित्सा, भवन निर्माण, सिविल इंजीनियरिंग, नौकायन निर्माण, दिशा ज्ञान, ललित कला, योग, शतरंज इत्यादि में प्रामाणिक रूप से मौलिक योगदान किया।" 21 जून को मनाया जाने वाला 'विश्व योग दिवस' को सम्पूर्ण विश्व ने अपनाया है। भारतीय शिक्षाप्रणाली का उद्देश्य अच्छे गुणों वाले मनुष्य का विकास करना तथा भारतीय जड़ों और गौरव से बाँधे रहने का है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकासोन्मुख शिक्षा पर दिया गया है "जैसे सिलने का कार्य, व्यावसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियांत्रिकी और साथ ही साथ सम्प्रेषण, चर्चा और वाद-संवाद करने के व्यावहारिक कौशल सॉफ्ट स्किल्स भी शामिल हैं। यह विचार कि इंसानी सृजन के सभी क्षेत्र जिसमें गणित, विज्ञान, पेशेवर और व्यावसायिक विषय और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं को कलाओं के रूप में देखा जाना चाहिए, भारतीय चिंतन की देन है। विभिन्न कलाओं के ज्ञान के इस विचार या जैसा कि आधुनिक युग में जिसे 'लिबरल आर्ट्स कलाओं का एक उदार नजरिया' कहा जाता है भारतीय शिक्षा में पुनः शामिल करना ही होगा। चूँकि यह वही शिक्षा है जिसकी 21वीं शताब्दी में आवश्यकता होगी।'

धर्म, दर्शन, अध्यात्म, आयुर्वेद, योग आदि सब कुछ तो भारत ने दुनिया को दिया। चरक और सुश्रुत से लेकर वेद, पुराण स्मृतियाँ, महाभारत, रामायण, बौद्ध और जैन के योगदान तथा मध्यकाल की पूरी ज्ञान परंपरा 'संतो भाई आई ज्ञान की आँधी रे !' भक्ति आंदोलन, आधुनिक युग का स्वाधीनता आंदोलन, भारतीय नवजागरण और सभी में कोई न कोई पारस्परिक संबंध स्पष्ट दिखाई देता है।

विश्व कल्याण का मंत्र, शांति, करुणा, दया, भ्रातृत्व सहयोग यह ऐसा आधारभूत मानवीय मूल्य है जो पूरी दुनिया को एक साथ जोड़ने में काम आता है। हम अपनी ज्ञान परंपरा को जानें, पहचानें, उसका राष्ट्र निर्माण एवं विकास, मानव कल्याण हेतु प्रयोग करें। भावी पीढ़ी, युवा पीढ़ी इस संकल्प को जाने-पहचाने, इस पर गर्व करे, यही इस संगोष्ठी अर्थात् परियोजना का उद्देश्य है। भारतीय ज्ञान परंपरा के सातत्य को जानना, पहचानना, आत्मसात करना एवं राष्ट्र की प्रगति में उसका प्रभावकारी ढंग से उपयोग करना, राष्ट्र निर्माण और विकास के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देना आवश्यक है जिससे हम पुनः विश्व गुरू बन सकते हैं। नालंदा विश्वविद्यालय को पुनः विकसित करने का सफल प्रयास हो रहा है।

निष्कर्षतः भारतीय ज्ञान परंपरा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम में शामिल करने पर विशेष जोर दिया गया है तथा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान और परंपरा के आलोक में सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। जिससे युवाओं में कौशल उन्नयन एवं रचनात्मक सोच विकसित होगी। यदि शिक्षा नीति की कार्ययोजना का सफल व सुनियोजित क्रियान्वयन होता है तो भारत 2047 तक विकसित भारत के रूप में अपने राष्ट्रीय ध्वज को स्थापित कर वैश्विक पटल पर विश्वगुरु के सपने को साकार कर सकेगा।

सुरेश कुमार शर्मा
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

आधुनिक शिक्षा और प्रबंधन का समाज पर प्रभाव

आधुनिक युग में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं रही बल्कि यह समाज के विकास और परिवर्तन की एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बन चुकी है। आज की शिक्षा प्रणाली में केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं बल्कि कौशल तकनीकी समझ और प्रबंधन की क्षमता को भी महत्त्व दिया जाता है। जब शिक्षा और प्रबंधन एक साथ कार्य करते हैं तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन और विकास की गति तेज हो जाती है।

सबसे पहले आधुनिक शिक्षा लोगों में जागरूकता और समझ विकसित करती है। शिक्षित व्यक्ति समाज की समस्याओं को बेहतर ढंग से पहचान सकता है और उनके समाधान के लिए प्रयास करता है। शिक्षा व्यक्ति को तार्किक सोच रचनात्मकता और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। इससे व्यक्ति अपने जीवन में सही निर्णय ले पाता है और समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाता है। विश्व स्तर पर भी यह माना जाता है कि शिक्षा समाज में समानता और जागरूकता को बढ़ाने का सबसे प्रभावी साधन है। इसी कारण कई अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाए जैसे युनेस्को शिक्षा के प्रसार पर विशेष जोर देती है। आधुनिक शिक्षा में प्रबंधन का महत्त्व भी तेजी से बढ़ रहा है।

प्रबंधन हमें यह सिखाता है कि उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग कैसे किया जाए किसी भी संस्था विद्यालय, उद्योग या संगठन को सफल बनाने के लिए सही योजना, संगठन निर्देशन और नियंत्रण की आवश्यकता होती है। ये सभी प्रबंधन के मुख्य सिद्धान्त है। जब छात्र शिक्षा के साथ प्रबंधन के सिद्धान्तों को भी सीखते हैं तो वे अपने कार्यो को अधिक प्रभावी और व्यवस्थित ढंग से कर सकते हैं। आधुनिक शिक्षा और प्रबंधन का प्रभाव आर्थिक विकास में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शिक्षित और प्रबंधन कौशल से युक्त लोग नए व्यवसाय शुरू करते है ओर रोजगार के अवसर पैदा करते हैं। इससे बेरोजगारी कम होती है और समाज की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। भारत में भी शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा को अधिक व्यावहारिक कौशल आधारित और समाज से जुड़ा बनाना है। इस नीति के माध्यम से छात्रों को नवाचार शोध और उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इसके अलावा आधुनिक शिक्षा सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देती हैं। शिक्षा के माध्यम से समाज में फैले अंधविश्वास भेदभाव और रूढ़िवादी सोच को कम किया जा सकता है जब लोग शिक्षित होते हैं तो, वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं और समाज में सहयोग तथा सहिष्णुता की भावना विकसित होती है। आज के डिजिटल युग में शिक्षा और प्रौद्योगिकी का संबंध भी बहुत मजबूत हो गया है। ऑनलाईन शिक्षा, डिजिटल लर्निंग और स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से शिक्षा अधिक सुलभ और प्रभावी बन रही है जब शिक्षा, तकनीक और प्रबंधन एक साथ काम करते हैं तब समाज में नवाचार और प्रगति की नई संभावनाएं उत्पन्न होती है। अंत में कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा और प्रबंधन समाज के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान और जागरुकता और कौशल प्रदान करती है जबकि प्रबंधन उस ज्ञान का सही और प्रभावी उपयोग करना सिखाता है। जब समाज में शिक्षित और प्रबंधन कुशल लोग होते हैं तब समाज अधिक संगठित प्रगतिशील और समृद्ध बनता है इसलिए आधुनिक शिक्षा और प्रबंधन का समाज पर प्रभाव अत्यन्त सकारात्मक और महत्त्वपूर्ण है।

डॉ. वर्षा जैन
सहायक आचार्य, वाणिज्य विभाग

शिक्षा, ज्ञान, प्रेरणा व शोध शिक्षक से परिपूर्ण

शिक्षा, शोध एवं समाज परस्पर जुड़े हुए स्तम्भ है जो समग्र विकास और प्रगति के लिए महत्त्वपूर्ण है यह एक ऐसा चक्र है जिसमें शिक्षा ज्ञान प्रदान करती है और शोध नई समझ उत्पन्न करता है और समाज इस ज्ञान का उपयोग देश को आगे बढ़ाने के लिए करता है।

शिक्षा : समाज की नींव शिक्षा मानव जीवन का वह पहलू है जो उसे अहंकार और अज्ञानता के सागर से प्रकाश और ज्ञान के सागर की तरफ ले जाती है। यह न केवल बौद्धिक विकास करती है बल्कि नैतिक मूल्यों का भी निर्माण करती है। शिक्षा से तात्पर्य न केवल पुस्तक के ज्ञान से है बल्कि दैनिक जीवन में हमें लोगों के व्यवहार अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान एवं वह सभी पहलू जो हमारे देश को श्रेष्ठ बनाने वह एक सुगठित समाज का निर्माण करने में हमारी सहायता करें शिक्षा का आधार है। शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनती है। शिक्षा से व्यक्ति में सही गलत का विवेक विकसित होता है। इसलिए कहा जाता है "शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जो पियेगा वही दहाड़ेगा।''

शिक्षा एवं प्रेरणा संदर्भित उदाहरण को हम यदि जोड़कर देखें तो स्पष्ट है हमारे महाविद्यालय के निदेशक एवं सचिव सुभाष जी अग्रवाल हमेशा हमारे कॉलेज की छात्राओं को 'वंडर गर्ल्स' कहकर संबोधित करते हैं जो हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने का कार्य करता है। यह शब्द केवल संबोधन नहीं बल्कि हमारे अंदर छिपी प्रतिभा को पहचान एवं आगे बढ़ाने की प्रेरणा है। जब मैं हमारी महाविद्यालय की महिला शिक्षक को उनके दायित्व को निष्ठा से निर्वहन करते हुए देखती हूँ तब महसूस होता है कि एक शिक्षित महिला समाज में कितना सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। एक महिला अपने ज्ञान से अपने घर, परिवार, समाज को केवल दिशा ही नहीं देती वरन पूर्णतः विकसित करती है। आज शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, रक्षा-सुरक्षा, शोध व अन्तरिक्ष तक महिला ज्ञान के माध्यम से अग्रणी है।

शिक्षक एवं शिक्षा :- एक शिक्षक विद्यार्थी के जीवन में ज्ञान आधार होता है। जब शिक्षक विद्या के कार्यो में निष्णात होकर समाज के लिए कार्य करता है तो समाज शिक्षा की दृष्टि से मजबूत होता है।

शिक्षा एवं शोध का समाज पर प्रभाव :- जब शिक्षा एवं शोध का समन्वय होता है तब समझ में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

मेडिकल फील्ड में शिक्षा एवं शोध का उपयोग :- माना कि किसी क्षेत्र में डेंगू या मलेरिया जैसी बीमारी फैल रही हैं तब शोध के द्वारा पता लगाया जाता है की बीमारी कैसे फैली एवं प्रभाव क्या है।

एग्रीकल्चर फील्ड में प्रभाव :- मान लो किसी क्षेत्र में फसल बार-बार खराब हो रही है तो शोध के द्वारा वैज्ञानिक यह पता लगते हैं की मिट्टी में किस तत्त्व की कमी है या कौन सी बीमारी फसल को नुकसान पहुँचा रही है। ड्रिप इरीगेशन जैसी तकनीक रिसर्च का ही परिणाम है जिसे अपनाकर किस काम से कम पानी में ज्यादा स्पेशल उत्पादन कर सकता है और भूमि भी उपजाऊ बनी रहती है।

निकिता चारण
एम.एससी. प्राणीशास्त्र विज्ञान
तृतीय सेमेस्टर

अध्यापक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में संरचनात्मक परिवर्तन के लिए एक सटीक आधारशिला प्रस्तुत करती है। नीति में स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्र का विकास और अध्यापक शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू है। इसीलिए माना जाता है कि राष्ट्र के विकास में अध्यापकों का और अगली पीढ़ी के अध्यापकों को तैयार करने में अध्यापक शिक्षा का योगदान प्रभावपूर्ण है। यह अनुशंसा करती है कि अध्यापक बनने की प्रक्रिया में बहु विषयक दृष्टिकोण एवं ज्ञान का होना अति आवश्यक है । यह बताती है कि अध्यापकों में शिक्षा और शिक्षण की आधुनिक प्रवृत्तियों के साथ भारतीय मूल्यों, भाषाओं, लोकाचार और परम्पराओं के प्रति जागरूकता भी होनी चाहिए। यह इस बात की भी पुरजोर वकालत करती है कि आगे आने वाले वर्षो में सुदृढ़ शैक्षिक, बहुविषयक और एकीकृत अध्यापक शिक्षा संस्थान अस्तित्व में होंगे। इसकी दृष्टि बहु विषयकता को प्रस्तुत करती है और इसके आधार के निर्माण हेतु सुस्थापित विषयों के सहयोग से भविष्य के अध्यापकों के समग्र विकास होने को रेखांकित करती है।

इसी कड़ी में नीति चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के संचालन पर जोर देते हुए वर्ष 2030 से एकल अध्यापक शिक्षा के संस्थानों को बहु-विषयक संस्थानों में बदलने की आवश्यकता को बताती है। इस प्रकार नीति की अनुशंसा का ही परिणाम है कि देशभर में चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस तरह देश में शिक्षा व्यवस्था के रूपान्तरण के लिए निर्मित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अध्यापक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य से विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और समुदाय के बंधन को सुदृढ़ता प्रदान करने पर जोर देती है। यह अन्तर्विषयपरकता को बेहतर बनाने के लिए विषयों के सम्बन्ध और उनके सहयोग देने की की आवश्यकता को भी केन्द्रित करती है। नीति का ध्येय अध्यापक शिक्षा को बहुआयामी व्यावसायिक शिक्षा के रूप में सुस्थापित करने और उसी अनुसार सिद्धान्त बनाने और व्यवहार करने पर केन्द्रित है।

इसी दृष्टि को व्यवहारगत बनाने के लिए पूर्व सेवा शिक्षक तैयारी के लिए भविष्य के अध्यापकों का चयन राष्ट्रीय स्तर की परीक्षण संस्थान द्वारा आयोजित अभिवृत्ति परीक्षण के माध्यम से किया जा रहा है। इस प्रकार यह पूर्व और सेवारत अध्यापक शिक्षा के प्रभावी आयोजन पर जोर देती है। अध्यापक शिक्षा को दिशा प्रदान करती राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा, प्रशिक्षण, व्यावसायिक विकास के साथ-साथ क्षेत्रीय अनुभव, अनुसंधान और समुदाय के साथ इसके जुड़ाव का भी पुरजोर समर्थन करती है।

यह अध्यापक शिक्षा को पारम्परिकता और आधुनिकता दोनों की दृष्टि प्रदान करती है। यह अध्यापक शिक्षा के चिरपरिचित शिक्षण पद्धतियों के साथ प्रौद्योगिकी से जुड़ाव को भी रेखांकित करती है। इस प्रकार यह कहा जाना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अध्यापक और उसकी तैयारी को एक व्यापक और समृद्ध रूपरेखा प्रदान करती है। यह भविष्य के अध्यापकों की व्यावसायिक आवश्यकताओं को भी प्रस्तुत करते हुए एक ऐसे अध्यापक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता को रेखांकित करती है जो कि राष्ट्र के प्रभावपूर्ण विकास में योगदान देने वाले शिक्षकों का निर्माण कर सके।

डॉ. स्मिता पंचौली
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

नई शिक्षा नीति 2020: समावेशी बदलाव की ओर

भारत में शिक्षा व्यवस्था का इतिहास प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अत्यंत गौरवमयी रहा है। हर दौर में शिक्षा का स्वरूप बदलता गया है लेकिन इसका उद्देश्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाना और व्यक्तित्व का निर्माण करना हमेशा स्थिर रहा है। 2020 में भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति (NEP) को लागू किया जो शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतीक है। यह नीति न केवल शैक्षिक प्रणाली को नया दृष्टिकोण देती है बल्कि यह समाज में व्याप्त असमानताओं को भी दूर करने का प्रयास करती है।

शिक्षण के क्षेत्र में परिवर्तन :-नई शिक्षा नीति 2020 में मुख्य रूप से विद्यार्थियों की समग्र शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है। नीति के अनुसार, अब पाठ्यक्रम में विविधता, रचनात्मकता और विद्यार्थियों की सोच के विकास पर जोर दिया जाएगा। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अब केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहेगी बल्कि वह विद्यार्थियों के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेंगे। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को सीखने की स्वतंत्रता और विचार करने की क्षमता विकसित की जाएगी। नीति में विद्यार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षा देने का प्रावधान है जिससे वे न केवल किताबों से बल्कि जीवन से भी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

शोध में सुधार :- शोध को बढ़ावा देने के लिए नई नीति में अनेक सुधारों की बात की गई है। भारतीय शोध संस्थानों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा बनाने के लिए शोध कार्यों को अधिक प्रोत्साहन दिया जाएगा। शोधकर्ताओं को अपने विषय में गहराई से अध्ययन करने के लिए सक्षम बनाया जाएगा। इसके अलावा नीति में बहु-विषयक शिक्षा का सुझाव दिया गया है जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार कई क्षेत्रों में शोध कर सकें। यह शोध न केवल अकादमिक बल्कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भी व्यावहारिक समाधान देने में सहायक होगा।

समाज संदर्भित विचार :- नई शिक्षा नीति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि यह समाज की विभिन्न जरूरतों और असमानताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन की गई है। यह नीति समाज के हर वर्ग, विशेषकर पिछड़े वर्गों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए समान अवसर प्रदान करने का वादा करती है। शिक्षा को सबके लिए सुलभ और समावेशी बनाने के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं। इसके अंतर्गत, ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था को भी मजबूत किया गया है ताकि दूर-दराज के इलाकों में रहने वाले विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके। इसके अलावा समाज के कल्याण के लिए शिक्षा का उपयोग करके बेहतर नागरिक तैयार करने का उद्देश्य है।

नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को व्यापक दृष्टिकोण से पुनः परिभाषित करती है। यह नीति शिक्षण के साथ-साथ समाज और शोध के संबंधों को भी मज़बूती से जोड़ती है, जिससे हम एक बेहतर और समावेशी समाज की ओर बढ़ सकें। इसके माध्यम से शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम न बनाकर एक सामाजिक परिवर्तन का औजार भी बनाया जा रहा है।

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

शिक्षा, अनुसंधान और समाज: एक समृद्ध शृंखला

शिक्षा, अनुसंधान और समाज तीनों एक दूसरे के पूरक है शिक्षा को प्रगति की नींव, अनुसंधान को खोज का प्रेरक तत्त्व एवं समाज का सर्वांगीण स्वरूप एक दूसरे से शृंखलाबद्ध है। सरल रूप में शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा स्थापित ज्ञान अगली पीढ़ी तक पहुँचता है। यह व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और सोचने की क्षमता प्रदान करती है। लेकिन यदि शिक्षा केवल जानकारी देने तक सीमित रह जाए तो वह ठहर जाती है। छात्र तथ्यों को याद तो कर लेते हैं परंतु उन पर प्रश्न उठाने का साहस विकसित नहीं कर पाते। यहीं से अनुसंधान की भूमिका आरंभ होती है। अनुसंधान ज्ञान को स्थिर नहीं मानता। वह प्रश्न करता है जाँचता है और कई बार स्थापित धारणाओं को बदल देता है। जब शिक्षा और अनुसंधान का मेल होता है तब सीखना सक्रिय हो जाता है। छात्र केवल श्रोता नहीं रहते बल्कि ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं। यदि कक्षा का वातावरण ऐसा हो जहाँ छात्रों को 'क्यों' पूछने के लिए प्रेरित किया जाए तो शिक्षा का उद्देश्य बदल जाता है। छात्रों को केवल परीक्षा के लिए नहीं बल्कि जीवन की जटिल परिस्थितियों के लिए तैयार करता है।

शिक्षकों की भूमिका शिक्षा व शोध प्रक्रिया में केंद्रीय है। वे केवल ज्ञान देने वाले नहीं बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक भी होते हैं। यदि वे छात्रों को अपने शोध कार्य में सम्मिलित करें तो उनमें खोज की भावना विकसित होती है। साथ ही उन्हें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका कार्य समाज के लिए उपयोगी और प्रासंगिक बना रहे। छात्रों के लिए यह समझना आवश्यक है कि शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है। यह केवल कक्षा तक सीमित नहीं है। इसमें प्रश्न करना, नए विचारों को समझना और उन्हें व्यवहार में लाना शामिल है। अनुसंधान की शुरुआत जिज्ञासा से होती है और समाज उसी का विस्तार है जिसमें हर व्यक्ति की भूमिका होती है।

अंततः शिक्षा, अनुसंधान और समाज एक-दूसरे से जुड़े हुए तंत्र हैं। जब ये संतुलित और समन्वित रूप से कार्य करते हैं तो प्रगति की दिशा स्पष्ट होती है। शिक्षा विचारों को आकार देती है, अनुसंधान ज्ञान का विस्तार करता है और समाज उसे उद्देश्य प्रदान करता है। छात्रों के लिए इस संबंध को समझना आवश्यक है क्योंकि यही उन्हें अपने योगदान का अर्थ समझने में सहायता करता है।

भविष्य उन्हीं का होगा जो केवल ज्ञात तथ्यों तक सीमित नहीं रहेंगे बल्कि प्रश्न करेंगे नए मार्ग खोजेंगे और अपने ज्ञान का उपयोग जिम्मेदारी के साथ करेंगे।

नेहा शर्मा,
प्रशासनिक विभाग

शिक्षा का नवोदय

जब सपनों ने आँखें खोली,
तब शिक्षा ने दिशा बदली।
बचपन की कोमल अंगुलियों में,
अब संभावनाओं की लौ है जली।
नहीं रहेगा अब केवल रहना,
नहीं रहेगा डर का पहरा।
सीखना होगा जीवन जीना,
ज्ञान बनेगा दीपक गहरा।
मातृभाषा की मधुर ध्वनि में,
आत्मविश्वास पनपेगा।
5+3+3+4 की सीढ़ी चढ़कर,
हर बचपन आगे बढ़ेगा।
कला और विज्ञान संग मिलकर,
रचेंगे नव निर्माण।
कौशल, शोध और नवाचार से,
सजेगा भारत का मान।
डिजिटल आकाश के नीचे,
विचारों को मिले पंख नये।
बहुविषयक शिक्षा के संग,
सपनों के रंग हो सजे।
यह केवल नीति नहीं है,
यह भविष्य की कल्पना है।
हर युवा की आँखों में,
आत्मनिर्भरता की कामना है।
आओ मिलकर दीप जलाएँ,
ज्ञान बने पहचान हमारी।
नई शिक्षा की इस बेला में,
उज्ज्वल हो हर संतति हमारी।

देव श्री जैन
विभागाध्यक्ष, भौतिक विज्ञान विभाग

इतिहास शिक्षण - शोध एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान

इतिहास मानव सभ्यता की विकास यात्रा का दर्पण है। यह समाज के अतीत उसकी सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक संरचनाओं तथा राजनीतिक परिवर्तनों को समझने का माध्यम प्रदान करता है। किसी भी समाज की वर्तमान स्थिति को सही रूप में समझने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास का अध्ययन अत्यंत आवश्यक होता है। इतिहास के क्षेत्र में शोध का अर्थ है-ऐतिहासिक स्रोतों, तथ्यों तथा घटनाओं का तार्किक और वैज्ञानिक विश्लेषण। इसके माध्यम से अतीत की घटनाओं को केवल वर्णित नहीं किया जाता बल्कि उनके कारणों और प्रभावों को भी समझने का प्रयास किया जाता है।

इतिहास शिक्षण में शोध की पद्धति को अपनाने से विद्यार्थियों में जिज्ञासा और खोज की प्रवृत्ति विकसित होती है। वे केवल पाठ्यपुस्तक पर निर्भर नहीं रहते बल्कि विभिन्न स्रोतों जैसे अभिलेख, शिलालेख, ऐतिहासिक ग्रंथ, पुरातात्त्विक अवशेष तथा लोकस्मृतियों के आधार पर तथ्यों को समझने का प्रयास करते हैं। इससे उनमें आलोचनात्मक चिंतन और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का विकास होता है। यही आलोचनात्मक चिंतन सामाजिक समस्याओं के समाधान में अपनी महती भूमिका निभाता है। समाज में समय-समय पर अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती रही हैं। जातिगत असमानता, लैंगिक भेदभाव, आर्थिक विषमता, सामाजिक कुरीतियाँ तथा सांस्कृतिक संघर्ष जैसी समस्याएँ आज भी विभिन्न रूपों में दिखाई देती हैं। इन समस्याओं को समझने के लिए उनके ऐतिहासिक संदर्भों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इतिहास शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है। जब इन समस्याओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझा जाता है, तब उनके समाधान के लिए अधिक यथार्थवादी और प्रभावी दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है।

इतिहास का अध्ययन यह भी सिखाता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल शासन या सत्ता के प्रयासों से ही संभव नहीं होता बल्कि समाज के जागरूक और सक्रिय नागरिकों की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती है। इस प्रकार इतिहास शिक्षण विद्यार्थियों को एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाकर समाज विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज के समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि लोग अपने अतीत से सीख लेकर वर्तमान को अधिक न्यायपूर्ण और संतुलित बनाने का प्रयास करें। इतिहास शिक्षण इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि जब समाज में समानता, न्याय, सहिष्णुता तथा सहयोग जैसे मूल्यों को महत्त्व दिया जाता है तब समाज का विकास अधिक स्थायी और समन्वित होता है। इसके अतिरिक्त इतिहास शिक्षण राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना को भी सुदृढ़ करता है। जब विद्यार्थी इतिहास के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और विचारधाराओं को समझते हैं तब उनमें विविधता के प्रति सम्मान और सहअस्तित्व की भावना विकसित होती है। यह समाज में समरसता और सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होता है। विद्यार्थियों को परियोजना कार्य, क्षेत्रीय अध्ययन तथा ऐतिहासिक स्रोतों के विश्लेषण जैसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्थानीय इतिहास का अध्ययन भी इस दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। जब विद्यार्थी अपने आसपास के ऐतिहासिक स्थलों, परंपराओं और सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं तब इतिहास उनके लिए अधिक प्रासंगिक और जीवंत बन जाता है।

निष्कर्षतः इतिहास शिक्षण में शोध का समावेश सामाजिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इतिहास का अध्ययन हमें यह सिखाता है कि समाज में परिवर्तन संभव है और इसके लिए ज्ञान, जागरूकता तथा सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। इतिहास शिक्षण को शोधपरक और समाजोन्मुख दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया जाए तो यह विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक संवेदनशीलता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकता है। इस प्रकार इतिहास शिक्षण न केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में सहायक होता है बल्कि एक जागरूक, समन्वित और प्रगतिशील समाज के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अर्चना कोठारी
सहायक आचार्य, इतिहास, शिक्षा विभाग

हिन्दी भाषा : शिक्षण और समाज

भाषा मानव सभ्यता की आत्मा तथा सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम होती है। किसी भी समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ, ऐतिहासिक अनुभव, मूल्यबोध तथा सामूहिक संवेदनाएँ भाषा के माध्यम से ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित होती रहती हैं। इसी दृष्टि से हिन्दी भाषा केवल संप्रेषण का साधन मात्र नहीं है बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रीय चेतना तथा लोकजीवन की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। इसलिए हिन्दी शिक्षण का संबंध केवल भाषाई दक्षता के विकास तक सीमित नहीं रहता।

हिन्दी शिक्षण का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषा के प्रति संवेदनशीलता, अभिव्यक्ति की क्षमता तथा विचारों की स्पष्टता का विकास करना है। भाषा मनुष्य के चिंतन को दिशा प्रदान करती है और उसे समाज के साथ संवाद स्थापित करने की क्षमता देती है। जब विद्यार्थी हिन्दी भाषा के साहित्य, व्याकरण तथा अभिव्यक्ति-कौशल का अध्ययन करते हैं तब वे केवल शब्दों और वाक्यों का ज्ञान ही प्राप्त नहीं करते, बल्कि वे समाज की विविध समस्याओं, मानवीय संबंधों, सांस्कृतिक परंपराओं तथा नैतिक मूल्यों को भी समझने लगते हैं।

हिन्दी साहित्य में समाज का यथार्थ अत्यंत व्यापक और गहन रूप में प्रतिबिंबित हुआ है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी साहित्यकारों ने अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों, संघर्षों और मानवीय आकांक्षाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। कबीर, तुलसीदास और सूरदास जैसे संत कवियों ने भक्ति के माध्यम से समाज में आध्यात्मिक चेतना और नैतिक मूल्यों का प्रसार किया, वहीं आधुनिक युग में प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा तथा रामधारी सिंह दिनकर जैसे साहित्यकारों ने सामाजिक विषमताओं, मानवीय संवेदनाओं और राष्ट्रीय चेतना को अपनी रचनाओं में सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। अतः हिन्दी शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी न केवल साहित्यिक सौंदर्य का आस्वादन करते हैं, बल्कि समाज की वास्तविकताओं और मानवीय संघर्षों को भी समझने लगते हैं।

वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में हिन्दी शिक्षण की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो गई है। आधुनिक संचार माध्यमों, डिजिटल तकनीक तथा इंटरनेट के विस्तार ने भाषा के प्रयोग और शिक्षण की पद्धतियों को नया स्वरूप प्रदान किया है। हिन्दी भाषा अब केवल साहित्य और शिक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह मीडिया, पत्रकारिता, सिनेमा, प्रशासन तथा सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी व्यापक रूप से प्रयुक्त होने लगी है। ऐसे में हिन्दी शिक्षण का दायित्व केवल पारंपरिक भाषा-ज्ञान तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि उसे आधुनिक संचार-कौशल, रचनात्मक लेखन तथा आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता भी विकसित करनी होती है।

यद्यपि आधुनिक समय में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव बढ़ता जा रहा है फिर भी हिन्दी का महत्त्व कम नहीं हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी शिक्षण को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और समाजोन्मुख बनाया जाए। शिक्षण की ऐसी पद्धतियाँ विकसित की जानी चाहिए जिनसे विद्यार्थी भाषा को केवल पाठ्यक्रम की आवश्यकता के रूप में न देखें बल्कि उसे जीवन और समाज से जोड़कर समझ सकें। रचनात्मक लेखन, संवाद, नाटक, वाद-विवाद तथा सामाजिक विषयों पर चर्चा जैसी गतिविधियाँ हिन्दी शिक्षण को अधिक जीवंत और उपयोगी बना सकती हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी शिक्षण और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ और परस्पर पूरक है। हिन्दी भाषा के माध्यम से न केवल ज्ञान का संचार होता है बल्कि सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक पहचान और मानवीय मूल्यों का भी विकास होता है। यदि हिन्दी शिक्षण को समाज की वास्तविक आवश्यकताओं और चुनौतियों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाए तो यह न केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में सहायक होगा।

इस प्रकार हिन्दी शिक्षण केवल भाषा-अध्ययन की प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के समन्वित विकास का एक सशक्त माध्यम है।

डॉ. ज्योति शर्मा
सहायक आचार्य, हिंदी

कर्ताभाव से दृष्टाभाव की ओर

जैसा कि विश्व कर्म प्रधान है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म को पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से करने का प्रयास करता है परंतु कर्म को करने हेतु भी दो भाव अर्थात दृष्टिकोण हो सकते हैं, जिनमें से प्रथम है कर्ताभाव तथा द्वितीय है दृष्टा भाव ।

कर्ताभाव :- किसी कार्य को करने वाला स्वयं को समझना। इसी भाव को कर्ताभाव कहते हैं। व्यक्ति हर कर्म में स्वयं की भागिता मानते हुए स्वयं को भागी के रूप में देखता है। इसमें व्यक्ति कार्य करने के दौरान आने वाली चुनौतियों और समस्याओं से स्वयं को घिरा हुआ पाता है और इस दबाव के कारण कई बार उचित प्रतिक्रिया एवं निर्णय लेने में खुद को असमर्थ पाता है तथा महाभारत के अर्जुन की भांति किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में चला जाता है। किंकर्त्तव्यविमूढ़ता वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति क्या करें और क्या ना करें के संबंध में निर्णय लेने की क्षमता खो देता है। जिस प्रकार कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन युद्ध के लिए तैयार होकर पहुँच तो गया परन्तु मैदान के मध्य में पहुँच कर शस्त्र छोड़ दिए और स्वयं को कर्ता समझ कर ग्लानि से भर गया साथ ही कर्त्तव्य पथ से विचलित होने लगा ।

वर्तमान में अधिकांश व्यक्ति किसी भी क्षेत्र चाहे वो कार्यस्थल से सम्बंधित हो अथवा जीवन से संबंधित स्वयं को कर्ताभाव में रखकर ही किसी कार्य का प्रारंभ, संपादन एवं समापन करने हेतु तत्पर रहता है जिसके परिणाम स्वरूप कई बार वह या तो उचित निर्णय नहीं ले पाता अथवा निर्णय में देरी होती है तथा कई बार किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में चला जाता है। कर्ताभाव में रहते हुए व्यक्ति फल की इच्छा तो त्याग देता है परंतु कर्म के बंधन से बंधा रहता है जिसके कारण अंतर्मन की पूर्ण शांति को प्राप्त नहीं कर पाता है।

स्वयं को कर्ता भाव में मानने पर आने वाली कठिनाईयाँ :- अनिर्णय की स्थिति, अनिर्णय की स्थिति, चुनौतियाँ, मानसिक क्षमता, नवाचार एवं परिवर्तन, भय आदि हैं।

दृष्टाभाव :- इसमें व्यक्ति स्वयं की भूमिका भागीदारी अर्थात् कर्ता के रूप में ना मानकर दर्शक अर्थात साक्षी के रूप में मानता है तथा संपूर्ण कर्मों को एक साक्षी के रूप में देखता है जिससे वह खुद को कर्मों के बंधन से मुक्त पाता है और खुद को मात्र एक सलाहकार की भूमिका में पाता है। जैसा कि हम दैनिक जीवन में हमारे आसपास देखते हैं कि व्यक्ति दूसरों को किसी कठिन परिस्थिति में अच्छी से अच्छी सलाह उचित विवेक के साथ दे सकता है जबकि उस कठिनाई में फँसे व्यक्ति में निर्णय लेने की क्षमता सामान्य रूप से कम हो जाती है इसी दृष्टिकोण के आधार पर यदि हम स्वयं को दृष्टाभाव में रखें और फिर हर परिस्थिति में स्वयं के सलाहकार स्वयं बन जाए तो इससे कार्य क्षमता एवं निर्णय लेने की क्षमता में निश्चित रूप से सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। दृष्टाभाव मानने पर जो परिवर्तन होते है उनमें समझ की क्षमता, चुनौती पर निर्णय, नवाचार परिवर्तन का ज्ञान, निर्णय प्रतिक्रिया, आत्मविश्वास, स्वनिर्णय, निष्पक्ष निर्णय प्रमुख हैं।

अंत में दोनों भावों का निष्कर्ष यही निकल कर आता है कि कुरुक्षेत्र रूपी कर्म स्थली के रण में कर्ता भाव आपको मात्र रथी अर्जुन का ही दृष्टिकोण प्रदान करता है जबकि दृष्टा भाव सारथी श्री कृष्ण बनकर उचित कर्त्तव्य पथ दर्शाता है।

मुस्कान वैष्णव
बी.ए.बीएड., प्रथम वर्ष

ज्ञान से नवाचार तक: नई शिक्षा नीति 2020

"सीखने से रचनात्मकता आती है, रचनात्मकता से सोच पैदा होती है, सोच से ज्ञान मिलता है और ज्ञान आपको महान बनाता है।" - डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाने का प्रयास है। पहले शिक्षा का मुख्य उद्देश्य परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना माना जाता रहा है लेकिन अब शिक्षा का लक्ष्य छात्रों को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। यह छात्रों को विषयों को समझने, विश्लेषण करने और समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रेरित करती है।नई शिक्षा नीति समग्र और बहुविषयक शिक्षा पर भी विशेष जोर देती है। पहले छात्रों को केवल एक ही विषय क्षेत्र जैसे विज्ञान, वाणिज्य या कला चुनना पड़ता था। लेकिन अब छात्रों को विभिन्न विषयों को साथ में पढ़ने की स्वतंत्रता दी गई है। मेरे विचार से यह व्यवस्था छात्रों की सोच को व्यापक बनाती है और उन्हें नई संभावनाओं को समझने का अवसर देती है।

नई शिक्षा नीति कौशल विकास और अनुभव आधारित शिक्षा पर भी बल देती है। इंटर्नशिप, प्रोजेक्ट और वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से छात्र अपने सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहार में लागू करना सीखते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समाज की समस्याओं के समाधान खोजने के लिए सक्षम बनते हैं। इसमें तकनीक के महत्व पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। आज के समय में शिक्षा काफी हद तक डिजिटल साधनों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर आधारित हो गई है। नई शिक्षा नीति 2020 पढ़ाई में तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देती है ताकि सीखने की प्रक्रिया अधिक रोचक और आसान बन सके। मेरे विचार से डिजिटल शिक्षा दूरी की समस्या को कम कर सकती है और दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दे सकती है। साथ ही, यह छात्रों को आधुनिक तकनीक से जुड़े आवश्यक कौशल भी सिखाती है जो आज के नौकरी के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। जहाँ छात्र नई चीजें सीखने, खोजने और कुछ नया करने के लिए प्रेरित होते हैं। यह छात्रों को अलग तरीके से सोचने और अपनी समस्याओं के समाधान खुद खोजने में मदद करता है। इस तरह की शिक्षा केवल बातें याद करने तक सीमित नहीं रहती बल्कि सीखने की पूरी प्रक्रिया को बेहतर और अधिक उपयोगी बनाती है।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को ऐसा बनाना है जो रचनात्मकता, शोध और नवाचार को बढ़ावा दे। समग्र शिक्षा, कौशल विकास और शोध की संस्कृति पर ध्यान देकर यह नीति छात्रों को आधुनिक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करना चाहती है। जब ज्ञान के साथ रचनात्मक सोच और उसका व्यावहारिक उपयोग जुड़ता है तब नवाचार पैदा होता है जो समाज और देश दोनों के लिए लाभदायक होता है।

"मन का विकास करना ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।" - डॉ. भीमराव अम्बेडकर

वंशिका जैन
बी.ए., तृतीय वर्ष

शिक्षा समाज की आत्मा : सूचना प्रौद्योगिकी उसका आधुनिक स्वरूप

आज वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण के दौर में शिक्षा केवल राष्ट्रीय नहीं बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा का आधार बन चुकी है। ऐसे में शिक्षण शोध की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वर्तमान युग ज्ञान-विज्ञान और डिजिटल क्रांति का युग है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण है। शिक्षण शोध शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, प्रासंगिक और समाजोपयोगी बनाने का कार्य करता है। जब इसमें सूचना प्रौद्योगिकी का समावेश होता है तब शिक्षा वैश्विक, गतिशील और अधिक सुलभ बन जाती है।

शिक्षण शोध की अवधारणा

शिक्षण शोध शिक्षा से संबंधित समस्याओं का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन है। इसका उद्देश्य - नई शिक्षण विधियों का विकास, पाठ्यक्रम में सुधार, मूल्यांकन प्रणाली का परिष्कार, विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाना है।

सूचना प्रौद्योगिकी : शोध की नई दिशा

"डिजिटल तकनीक ने शोध को सीमाओं से मुक्त कर वैश्विक मंच प्रदान किया है।" सूचना प्रौद्योगिकी ने शिक्षण शोध को नई गति और व्यापकता दी है।

1. **डेटा संग्रहण** - ऑनलाइन सर्वे, गूगल फॉर्म, मोबाइल ऐप के माध्यम से बड़े पैमाने पर डेटा एकत्र करना संभव हुआ है।
2. **डेटा विश्लेषण** - SPSS, Excel, Python जैसे उपकरणों से शोध अधिक वैज्ञानिक और सटीक बना है।
3. **डिजिटल संसाधन**-ई-लाइब्रेरी, ई-जर्नल और ऑनलाइन डेटाबेस ने शोधार्थियों को वैश्विक सामग्री उपलब्ध कराई है।
4. **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस** - AI आधारित विश्लेषण से व्यक्तिगत शिक्षण को बढ़ावा मिल रहा है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के माध्यम से शिक्षण शोध शिक्षा को अधिक प्रायोगिक, प्रभावी और समाजोपयोगी बनाता है। यह केवल सैद्धांतिक अध्ययन नहीं बल्कि व्यावहारिक सुधार की प्रक्रिया है।

डिजिटल क्रांति और वैश्वीकरण

"डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान को कक्षा की चारदीवारी से निकालकर वैश्विक मंच पर पहुँचा दिया है।" ऑनलाइन कोर्स, वर्चुअल क्लास, वेबिनार और डिजिटल प्रमाणपत्रों ने शिक्षा को वैश्विक रूप दिया है। कोविड-19 काल में ऑनलाइन शिक्षा ने यह सिद्ध किया कि सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

चुनौतियाँ-डिजिटल विभाजन, तकनीकि संसाधनों की असमान उपलब्धता, डेटा सुरक्षा की समस्या, तकनीकी प्रशिक्षण की कमी

निष्कर्ष

यदि तकनीकि नवाचारों को संतुलित और प्रभावी ढंग से अपनाया जाए तो शिक्षा अधिक समावेशी, पारदर्शी और भविष्योन्मुखी बन सकती है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और डिजिटल विश्लेषण उपकरण शिक्षण शोध को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाएंगे। अतः आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में तकनीकि नवाचारों को संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए।

"सूचना प्रौद्योगिकी से युक्त शिक्षण शोध ही समाज को ज्ञानसम्पन्न और सशक्त बना सकता है।"

मीना शर्मा
सहायक आचार्य, कंप्यूटर विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान शिक्षण में आधुनिक तकनीक की उपयोगिता

भौतिक विज्ञान के शिक्षण में अनुसंधान और नवाचारों का समावेश केवल परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने के लिए नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अनिवार्य है । नवीन शोध के माध्यम से शिक्षा को रोचक बनाने में सिमुलेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑगमेंटेड रियलिटी, डाटा एनालिटिक्स का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भौतिक विज्ञान शिक्षण से भविष्य के वैज्ञानिकों को तैयार करने में यह तकनीकीयाँ निम्न प्रकार अपनी भूमिका निभाती है-"जिज्ञासा और अन्वेषण" आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सिमुलेशन छात्रों को "क्या होगा अगर !" जैसे सवाल पूछने और उत्तर खोजने की आजादी देते हैं जो एक शोधकर्ता की प्रथम सीढ़ी है।

जटिलता का सरलीकरण-ऑगमेंटेड रियलिटी उन सूक्ष्म या विशाल खगोलीय घटनाओं को छात्र की आँखों के सामने प्रस्तुत कर देती है जिन्हें केवल कल्पना में समझना कठिन था। जब छात्र क्वांटम एंटेंगलमेंट और टनलिंग जैसे इफेक्ट अपनी आँखों के सामने अनुभव करते हैं तो उनकी समझ और अधिक गहरी होती है साथ ही साथ सिमुलेशन और ऑगमेंटेड रियलिटी के जरिए ग्राह्य गति को समझना अत्यंत ही आसान है जिसमें छात्र अपनी आँखों से ग्रहों के प्रक्षेपवक्र का विजुलाइजेशन कर पाते हैं एवं सिमुलेशन के जरिए आधुनिक भौतिकी के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं यथा **Wave particle duality, Concept of wave packet and uncertainty principle** को समझना बेहद ही आसान हो जाता है तथा इसके जरिए स्टूडेंट्स में साइंटिफिक टेंपरामेंट विकसित करना, भविष्य के बेहतर वैज्ञानिकों की नींव का पत्थर साबित हो सकता है। आधुनिक समय में शोध अधिकांश तौर पर डाटा पर आधारित है। शिक्षण में डाटा एनालिटिक्स का प्रयोग छात्रों को प्रयोगों से प्राप्त जानकारी से निष्कर्ष निकालना सिखाता है जो कि किसी वैज्ञानिक पद्धति का मूल आधार है ।

डाटा एनालिटिक्स के जरिए सांख्यिकीय भौतिकी की समझ और भी आसान और सरल हो जाती है जो कि इस संपूर्ण ब्रह्मांड की अव्यवस्था और अधिकतम स्थाई अवस्था की विस्तृत चर्चा प्रस्तुत करता है ।

निष्कर्षतः ऐसा कहा जा सकता है की नवाचारी सेवाओं एवं तकनीकों के माध्यम से छात्र किताबी ज्ञान का व्यावहारिक एवं रचनात्मक उपयोग करना सीखते हैं तथा नई शिक्षा नीति प्रणाली भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी, डाटा एनालिटिक्स और डिजिटल उपकरणों के एकीकरण पर जोर देती है ताकि वैज्ञानिक और गणितीय सोच को बढ़ावा मिले।

मनोज जांगिड़
सहायक आचार्य, भौतिक विज्ञान विभाग

बेटी का सफर

आँखों में झलकी इतनी खुशियाँ,
जब घर आई नन्हीं बिटिया।
आँखों में सजाए इतने सपने,
पूरे कर दिए आकर उसने।
खूब मेहनत से उसे पढ़ाया,
बड़ी होकर परिवार का मान बढ़ाया।
धीरे -धीरे विवाह की शुभ बेला आई,
आखिर करना पड़ा बेटी को पराई।
बेटी की डोली सुन्दर सजाई,
खूब धूम धाम से की बेटी की विदाई।
धीरे-धीरे समय गहराया,
दहेज की माँग ने सिर उठाया।
प्रश्न उठाती वह सपनों में आई,
बापू क्यों कर दिया बापने मुझे पराया।
तभी एक दिन समाचार में आया,
बापू तेरी बेटी ने ज़हर खाया,
माँ-बाप ने खो दी अपनी बेटी,
जो सोती थी उनकी गोदी में।
अब ना गूँजेगी उनके घर में किलकारी,
न छायेगी कभी हरियाली।
सूनो विद्वानों अब तुम्हारी भी बारी आई,
पता नहीं कितनी बेटियाँ
करनी पड़ेगी पराई।
दहेज प्रथा को मिटाओ भाई,
इसी में है सबकी भलाई।

कल्पना कुमारी
बी.एससी. बीएड., चतुर्थ वर्ष

एक नयी उड़ान

चुनौतियाँ तूफ़ान बनी, पर इरादे थे पत्थर से।
हर असफलता से सीखा यही, उड़ान भरती है ऊँचाइयों से।
कठिनाईयों बिना अधूरी है ये संघर्ष की पहेलियां।
जब मेहनत हो संग तभी तो चुनौतियाँ भी लगती है
कहानियाँ, थक कर रुकना रुक कर डरना,
ये निशानियाँ नहीं है सफलता की,
मन का विश्वास रगों में साहस,
पहली पहल है प्रयासों की एक - एक प्रयास से
हर एक किताब खुलेगी
अवश्य ही एक दिन इस तरह मंज़िल भी मिलेगी।

पलक शर्मा
बी.एससी. गणित, द्वितीय वर्ष

तू बस तू ही रहना

तू अपने व्यक्तिगत सत्य मत चुनना,
तू वास्तविक सत्य को चुनना।
तू अपना पराया मत करना, तू सबको गले लगाना।
तू अच्छा बुरा मत देखना तू सिर्फ नैतिकता देखना।
तू स्त्री पुरुष मत बनना तू सिर्फ इंसान बनना।
तू किसी को दुख दर्द मत देना तू सिर्फ सुकून देना।
तू अतीत और भविष्य मत चुनना तू वर्तमान को चुनना।
तू भाव अभाव मत देखना तू अस्तित्व देखना।
तू ना आस्तिक बनाना ना नास्तिक बनना,
तू बस वास्तविक बनना।
मेरे दोस्त तू बस तू ही रहना, तू आप मत बनना।

सोनू
बी.ए., प्रथम वर्ष

समाज में शिक्षा प्रणाली

शिक्षा का महत्त्व समाज और व्यक्तित्व दोनों ही दृष्टिकोण से अधिक महत्त्वपूर्ण है। NEP के अनुसार समाज में शिक्षक का स्वरूप पारंपरिक रहने वाली पद्धति से बदलकर अधिक व्यावहारिक, छात्र केंद्रित और कौशल आधारित होना चाहिए। शिक्षक केवल अर्जन का माध्यम नहीं है बल्कि यह एक समग्र विकास का आधार भी है। यह सामाजिक असमानताओं को दूर करने जातिवाद और भेदभाव को समाप्त करने में सहायक होती है। हमारे समाज में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। शिक्षा हमारे जीवन का आधार है यह केवल हमारे ज्ञान और कौशल को ही नहीं बढ़ाती बल्कि हमारे व्यक्तित्व का भी निर्माण करती है एक अच्छा शिक्षक वो नहीं जो बच्चों को सिर्फ ज्ञान दे या फिर नोट्स बनवाएं बल्कि एक अच्छा शिक्षक वो है जो बच्चों को ज्ञान के साथ-साथ अपने जीवन में सफलता हासिल करने की तथा समाज में सही गलत तथ्यों का निष्तारण करने के योग्य बनाएं।

शिक्षक का कार्य केवल किताबों के माध्यम से नहीं होना चाहिए बल्कि उनमें कौशल उत्पन्न करने के माध्यम को भी ध्यान रखना चाहिए बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ अपने कौशल को आगे समझ में उच्च स्थान प्राप्त हो उसके लिए उन्हें अलग-अलग जिम्मेदारी वाले कार्य देने चाहिए जिनसे उनका आत्मविश्वास मज़बूत हो और वे नई-नई तकनीक सीखने में रुचि रखें बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ फील्ड ट्रिप करवानी भी जरूरी होती है जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। समाज में हर बच्चे को बोलने का अनेक गतिविधियों में भाग लेने का तथा विभिन्न गतिविधियों का संचालन करने का अवसर देना चाहिए जिससे उनका सिर्फ आत्मविश्वास ही नहीं बढ़ता है बल्कि समाज की नजर में एक सफल व्यक्ति की दृष्टि में आता है शिक्षा के साथ-साथ कौशल पर ध्यान देना ही समझ में एक अच्छी शिक्षा प्रणाली है जिससे समाज में सभी कुरीतियाँ खत्म हो जाए और समाज एक सकारात्मक सोच के साथ नए-नए विकास कार्यों के द्वारा आगे बढ़ सकें।

सिमरन बानो
बी.ए., तृतीय वर्ष

अच्छी शिक्षा, श्रेष्ठ समाज और उत्तम स्त्रोत

शिक्षा न केवल साक्षरता है बल्कि यह जीवन को सही दिशा देने का माध्यम है। अच्छी शिक्षा से तात्पर्य केवल किताबी ज्ञान या डिग्री प्राप्त करना नहीं है बल्कि यह वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति में आत्मविश्वास, नैतिकता, सोचने समझने की क्षमता और सही गलत में अंतर करने का बोध जगाती है।

शिक्षा और समाज का संबंधः- शिक्षक से ही समाज प्रगतिशील बन सकता है शिक्षा समाज को निम्नलिखित तरीकों से बेहतर बनाती है। सामाजिक रूढ़ियों का नाश, अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता, समानता व न्याय आदि है।

शिक्षा, राष्ट्र और व्यक्तिगत विकास का सबसे बड़ा स्रोतः- शिक्षा विकास का मूल मंत्र है जो न केवल नौकरी बल्कि शिक्षा के हर क्षेत्र में सफलता की कुंजी है। जैसे आर्थिक समृद्धि, तकनीकि और रचनात्मक विकास, शांति और स्थिरता आदि है।

अच्छी शिक्षा के प्रमुख स्तंभः- समाज को बदलने के लिए शिक्षा में निम्न तत्त्व होने आवश्यक है-मूल्य आधारित शिक्षा, कौशल विकास शिक्षा, शिक्षा का समावेश आदि।

समाज के निर्माण में शिक्षा की भूमिकाः- शिक्षा और समाज एक दूसरे के पूरक है शिक्षा समाज को उन्नत गतिशील और सभ्य बनाती है। इसके अन्तर्गत सामाजिक बुराईयों का अंत, सामान्य को बढ़ावा, नैतिक चरित्र का निर्माण आते हैं।

विकास का अच्छा स्रोतः- सुशिक्षित नागरिक, आर्थिक समृद्धि, नवाचार और अनुसंधान, बेहतर नेतृत्व आदि स्रोत है।

शिक्षा हस्तांतरण की परंपराः- शिक्षा का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होता है जिससे ज्ञान का संचय होता है जो समाज आज अच्छी शिक्षा में निवेश करता है वह कल विकास का सर्वोत्तम प्रतिफल प्राप्त करता है क्योंकि ज्ञान में निवेश ही सबसे बड़ा लाभ देता है।

निष्कर्षतः- यदि हमें एक सुदृढ़, उन्नत और श्रेष्ठ समाज का निर्माण करना है तो शिक्षा ही हमारा सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। जब हर बच्चा अच्छी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करेगा तो निःसंदेह समाज बेहतर होगा और देश विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

तमन्ना परसोया
बी.ए., प्रथम वर्ष

शिक्षण में गुरुकुल परंपरा

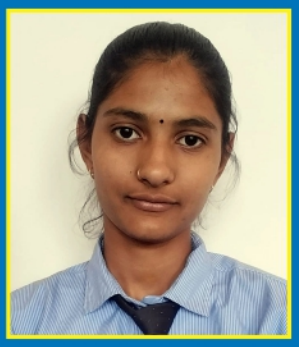

भारतीय संस्कृति में शिक्षा को केवल साक्षरता नहीं बल्कि शिक्षा व जीवन का साधन माना गया है इस जीवन के आधार का निर्माण गुरूकुल से ही सम्भव रहा है। गुरुकुल शब्द दो शब्दों से बना है गुरु (शिक्षक) और कुल (परिवार)। इसका अर्थ है गुरु का परिवार। यह विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरु के सान्निध्य में रहकर एक अनुशासित जीवन व्यतीत करता था। यह पद्धति आज की व्यावसायिक शिक्षा से पूर्णतः भिन्न एक जीवन निर्माण की प्रक्रिया है। यह शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को एकीकृत कर व्यक्ति को समाज के लिए एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करती है।

गुरुकुल परंपरा के मुख्य स्तंभ-

- **गुरु शिष्य संबंधः-** गुरुकुल का आधार गुरु और शिष्य के बीच का पवित्र संबंध था। गुरु केवल सूचना प्रदाता नहल्ल बल्कि एक आध्यात्मिक मार्गदर्शन और पिता तुल्य संरक्षक होता था। शिष्य गुरु की सेवा और आज्ञा पालन के माध्यम से विनम्रता और धैर्य सीखता था।
- **समग्र विकासः-** आधुनिक शिक्षा अक्सर केवल मस्तिष्क के विकास पर जोर देती है जबकि गुरुकुल प्रणाली पंचकोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोश) के विकास पर आधारित थी। इसमें शारीरिक सौष्ठव, मानसिक शांति और आत्मिक उन्नति का संतुलन था।
- **व्यावहारिक कौशलः-** साहित्य तर्कशास्त्र चिकित्सा युद्ध कौशल और कल जैसे विषयों का अध्ययन होता था गुरुकुल में सादगी अनुशासन और सामुदायिक जीवन पर जोर दिया जाता था।
- **प्रकृति के साथ सामंजस्यः-** अधिकांश गुरुकुल वनों या नगरों से दूर शांत वातावरण में होते थे प्रकृति के सान्निध्य में रहने से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और प्राकृतिक संसाधनों के सम्मान की भावना विकसित होती थी।
- **गुरुकुल परंपरा में शिक्षण पद्धतिः-**
  1. ज्ञान का हस्तांतरण रटने के बजाय समझ और मौखिक उच्चारण के माध्यम से ही होता था।

2. अनुशासन अधिगम विद्यार्थी कार्य को अच्छे से करके सीखते थे जिससे उनकी आत्मनिर्भरता और अधिक बढ़ जाती थी।
3. गुरू प्रत्येक शिष्य की क्षमता के अनुसार व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन करते थे। गुरू शिष्यों को उनकी क्षमता के अनुसार ही कार्य देते और जीवन जीना सिखाते थे।

- **आधुनिक युग में गुरूकुल की प्रासंगिकता :-** आज के भौतिकवादी युग में गुरूकुल नैतिकता और मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित कर सकते हैं। आज की शिक्षा मूल्य आधारित शिक्षा हो गई हैं। मानसिक स्वास्थ्य ध्यान और योग का समावेश विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता की शिक्षा गुरूकुल के जीवन कौशल प्रशिक्षण से प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष :- गुरूकुल परम्परा ने भारतीय ज्ञान परम्परा को जीवित रखा है। यद्यपि समय बदला है लेकिन गुरूकुल के मूल सिद्धान्त- अनुशासन, चरित्र निर्माण और गुरू शिष्य परम्परा आज भी उतने ही प्रासंगिक है। प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों का मिश्रण एक श्रेष्ठ समाज के निर्माण भारतीय शिक्षा पद्धति जिसे गुरूकुल परम्परा के नाम से जाना जाता है इसके विभिन्न आयामों का अन्वेषण करता है।

प्रियंका चौधरी
बी.ए., प्रथम वर्ष

नया संदेश

एक नन्हा बच्चा स्कूल गया,
मन में उसके सवाल नया।
क्यों पढ़ाई इतनी भारी है?
क्यों किताबों की ज़िम्मेदारी है?
तभी गुरुजी ने समझाया,
नई शिक्षा का दीप जलाया।
खेल-खेल में पढ़ाई होगी,
ज्ञान की नई लड़ाई होगी।
मातृभाषा का मान बढ़ेगा,
हर बच्चा आगे बढ़ेगा।
कौशल विज्ञान और सम्मान,
यही बनेगा भारत की पहचान।
ज्ञान का दीप जला है आज,
शिक्षा बदले अपना अंदाज़।
नई सोच की आई बहार,
सीख बनेगी अब आसान।
पाँच, तीन, तीन और चार,
शिक्षा का नया आधार।
सपनों को अब पंख मिलेंगे,
हर बच्चे के संग खिलेंगे।

सरगम काठात
बी.ए.बीएड., तृतीय वर्ष

प्रारंभिक शिक्षा एवं शिक्षक के स्वरूप

बच्चे तो कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं उन्हें जिस आकार में ढाला जाए वह वही रूप धारण कर लेते हैं। एक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि उसके जीवन की बुनियाद अच्छी हो। आज के समय में हम देखते हैं कि बालक को बचपन से ही कॉपी किताब आदि शिक्षा वस्तुओं के बोझ तले डाल दिया जाता है जिससे वह यह समझ ही नहीं पाता है कि वह खुद का बोझ उठाये या किताबों का। मेरे दृष्टिकोण से प्रथम 5 वर्ष बच्चों को अपने नैतिक मूल्यों से जोड़ना चाहिए। अपने धर्म एवं संस्कृति से जोड़ना चाहिए। माता-पिता को भी अपने आचरण से बच्चों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए क्योंकि बच्चे उपदेश से अधिक उदाहरण से सीखते हैं।

बचपन वह नींव है जहाँ से भविष्य का निर्माण होता है इसलिए इस अवस्था में उत्तम आचरण की प्रेरणा दी जाती है। अब हम अपना ध्यान स्कूली शिक्षा अर्थात् औपचारिक शिक्षा की ओर केंद्रित करते हैं जहाँ एक बच्चे का मिलन अपने गुरु से होता है हमारी संस्कृति में गुरुओं को भगवान का स्वरूप माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में अपनी एक प्रतिभा होती है और वह केवल किताबी ज्ञान पर आधारित हो यह आवश्यक नहीं एक सच्चा गुरु अपने प्रत्येक विद्यार्थी को आसमान की बुलंदियों को छू लेने का हौसला प्रदान करता है।

हर विद्यार्थी को अपनी रुचि अनुसार कार्य करने की प्रेरणा मिले तो वह अपने कार्य क्षेत्र में सर्वोत्तम साबित होगा, हो सकता है उसकी रुचि कला में हो, खेल में हो, वॉकेशनल ट्रेनिंग में हो, स्किल में हो, फोटोग्राफी, ए.आई में हो या बिजनेस मैनेजमेंट में हो एवं हम उसे दूसरे क्षेत्र में भेजने के लिए दबाव देंगे तो वह अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। आवश्यकता है शिक्षक एवं शिक्षार्थी योग्यता की दिशा में कार्य करें ताकि शिक्षा व्यवस्था प्राचीन स्वरूप की भांति जीवन के विविध आयामों की स्थापना कर सकें।

अंततः यही बात सर्वोपरि है कि प्रारंभिक शिक्षा में बच्चों की बुनियाद मजबूत हो, उसे उपयुक्त मार्गदर्शन मिले तो वह अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकता है एवं अपने देश व समाज को उन्नति की ओर ले जा सकता है।

लक्षिता सामरिया
बी.ए., प्रथम वर्ष

शिक्षा

शिक्षा को हमने है अपनाया,
ज्ञान को ही सुदृढ़ है बनाया।
सुन्दर समाज बनाने का,
एक सपना है सजाया।
चलो एक ज्ञान की दुनिया बसाते हैं,
इसे अपने अन्दाज़ में सँवारते हैं,
ज्ञान की उस डोर को पकड़कर एक सीढ़ी ओर चढ़ जाते हैं।
अपने आँसुओं को बहने मत दो,
जिन्होंने धिक्कारा है तुम्हें उन्हें कहने का मौका मत दो।
माना मुश्किलें हज़ार है मगर हिम्मत मत हार जाना,
भविष्य की फिक्र मत कर अगर शिक्षा को तुने थामा है।
शिक्षा ज्ञान का दीपक है तू उसकी ज्योति बन जा,
अंधेरे को मिटाने का एक जरिया बन जा।
तो चलो शिक्षा की नीति में चलकर,
इस आसमान को छू जाते हैं,
चलो नया इतिहास रच जाते हैं।

निशा तुंगरिया
एम.ए. पूर्वार्द्ध, हिन्दी साहित्य

शिक्षक

तू केवल वह व्यक्ति नहीं जो
बोर्ड पर सूत्र लिखता है।
तू वह दरार है जिससे होकर
सदियों का सन्नाटा चीखता है।
तेरे हाथों में किताब नहीं,
एक जनमानस की नियति पड़ी है।
तू जो पढ़ाएगा, वही सत्य बनेगा,
तू जो छोड़ देगा, वही प्रश्न मर जाएगा।
लेकिन सच पूछ? तेरे अन्दर का वह शिक्षक भी मर चुका है,
जो कभी पूछता था क्यों?
अब तू केवल क्या पढ़ाता है शिक्षण का असली नाम है-
अपने अहं को मिटाकर दूसरे के मन में बीज बोना
ऐसे बीज जो तुझसे भी बड़ा वृक्ष बनें।
लेकिन तूने तो उन बीजों को कुचल दिया
अपनी ही परछाई के डर से...

सुनीता बैरवा
बी.एससी.बीएड., द्वितीय वर्ष

रंगीली राजस्थान

पचरंगी लहरिया साफा जहाँ की शान है।
जहाँ जन्में वीर अगणित ग्रंथों ने किया गुणगान है।
है जो सारगर्भित नयनाभिराम
वो मेरा रंगीला राजस्थान है।

गेहूँ, बाजरा, मूंग, मोठ
सर्व प्रचलित धान है
मन को मजीरे सा मोह लेता
वो मेरा रंगीला राजस्थान है।

दाल, बाटी, चूरमा
नहीं स्वाद कभी जिसका थमा
नहीं जुबान में ताकत वो
जो कर सके इसका व्याख्यान
कण-कण माटी का पूजित जिसका
वो मेरा रंगीला राजस्थान है।

चितौड़गढ़ और स्वर्णगिरी
ना जिससे कभी नज़रे फिरी
माउंट आबू आब दिनकर सी
जयपुर गुलाबी शान है
जो धड़कन है अविरल भारत की
वो मेरा रंगीला राजस्थान है।

नारी शिक्षा पर जोर जहाँ
ना कलंक माथे पर शोर जहाँ
ना टूटे जिसका गुरूर
ऐसी जो मजबूत चट्टान है
गर्व से झूमती नारी जहाँ
वो मेरा रंगीला रसीला राजस्थान है।

सेठिया, भाटी, बारहठ ने
काव्य में किया बखान है
प्रताप, मीरा, पन्ना ने
जहाँ दिया सर्वस्व बलिदान है
अभिमान जिसका करता भारत
वो मेरा रंगीला राजस्थान है।

दिव्या पारीक
बी.ए.बीएड., प्रथम वर्ष

क्षमता आधारित शिक्षा से सफलता

यह शाश्वत नियम है कि यदि किसी विद्यार्थी को उसकी रूचि एवं क्षमता के आधार पर शिक्षण व्यवस्था से जोड़ा जाये तो निश्चित ही वह अपने क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करते हुए सफलता को प्राप्त करता है। इसे संदर्भित स्वरूप में समझने की चेष्टा करें तो हमारे सनातन ग्रंथ इसके सुस्पष्ट प्रमाण है। आपने देखा होगा कि महाभारत महाकाव्य में पाँच पाण्डव अपनी निश्चित शिक्षा एवं क्षमता के आधार पर सम्पूर्ण युद्ध क्षेत्र में अपने कौशल के माध्यम से कौरव की विशाल सेना को हरा कर विजय हासिल करते है। भीम में जहाँ शारीरिक सौष्ठव के अनुरूप गदा चालन की शिक्षा, अर्जुन के धैर्य अनुरूप तीरंदाजी की शिक्षा वहीं रामायण महाकाव्य में हनुमान में सिद्धियों की शिक्षा, राम में धैर्य, विनम्रता एवं देशकाल परिस्थिति के अनुरूप निर्णय शिक्षा से सभी पात्र अपने क्षेत्रों में विजय हासिल करते है। उसी दृष्टि से वर्तमान में प्रत्येक विद्यार्थी को क्षमता एवं व्यवस्था अनुरूप शिक्षा प्रदान की जाये तो वह सफलता प्राप्त कर अपने जीवन का सरलता से निर्वहन कर सकता है। आज नई शिक्षा नीति कुछ इन्हीं विचारों के आधार पर कार्यशील है जिसमें विद्यार्थी को मूल शिक्षा के साथ-साथ कौशल, व्यवसाय, प्रबंधन एवं गणितीय शिक्षा प्राप्त हो सके। प्राचीन काल में गुरूकुल प्रणाली के अन्तर्गत जिस प्रकार से वेद, पुराण, उपनिषद आदि से कौशल शिक्षा को दिया जाता था उसी प्रकार से भारत सरकार नई दिशा में कार्य करते हुए नई शिक्षा नीति में उन्हीं विधानों को जोड़ रही है जिससे प्रत्येक विद्यार्थी अपने सपनों को साकार कर सकेगा।

दिव्या वैष्णव, बी.ए., तृतीय वर्ष

एक अनोखी दोस्ती

किसी को लगती है डरावनी
तो किसी को, हो जाता है इससे लगाव।
कोई इसे वन वे ट्रेक समझता है
पर यह तो मल्टीपल चॉइस सी लगती है।
x,y,z को घर वेल्यू पर मनाना
दोस्तों को मनाने से भी आसान लगता है।
असाइंमेंट के बीच, डेडलाइन के नीचे,
कभी दिमाग घूम जाता है,
पर एक सही हल मिल जाए
तो दिल मुस्करा जाता है।
कभी उलझाती है, कभी सुलझाती है
कभी रूलाती है, कभी हँसाती है
ये मैथेमेटिक्स भी ज़िंदगी सी लगती है।
है दोस्ती मेरी अपने आप से,
पर मैथेमेटिक्स से थोड़ी ज्यादा लगती है
शायद इसलिए क्योंकि यह कभी झूठ नहीं बोलती है।

गुंजन जांगीड़
बी.एससी.बीएड., द्वितीय वर्ष

वर्तमान में शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक,मानसिक और सामाजिक विकास का मुख्य साधन है। वर्तमान समय में शिक्षा का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि आज का युग विज्ञान, तकनीक और प्रतिस्पर्धा का युग है। बिना शिक्षा के व्यक्ति अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता। शिक्षा न केवल ज्ञान देती है बल्कि यह व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक भी बनाती है। इसलिए आज के समय में शिक्षा का होना अत्यंत आवश्यक है।

- **व्यक्तित्व विकास :-** शिक्षा व्यक्ति के आत्मविश्वास, व्यवहार और सोच को विकसित करती है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है।
- **रोजगार के अवसर :-** आज के समय में अच्छी नौकरी पाने के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा से व्यक्ति के पास रोजगार के अवसर बहुत कम हो जाते हैं।
- **सामाजिक जागरूकता :-** शिक्षा समाज में जागरूकता फैलाती है। यह अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और कुरीतियों को समाप्त करने में मदद करती है।

- **तकनीकी युग में महत्त्व :-** आज का समय इंटरनेट, कम्प्यूटर और डिजिटल तकनीक का है। इन सभी को समझने और उपयोग करने के लिए शिक्षा जरूरी है।
- **देश के विकास में योगदान :-** एक शिक्षित समाज ही देश को प्रगति की ओर ले जाता। शिक्षा देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्तमान में शिक्षा की चुनौतियाँ एवं सुधार उपायः-

वर्तमान में भौतिक युग के कारण शिक्षा में असमानता का व्याप्त होना, महंगी शिक्षा का प्रचलन, डिज़िटल स्वरूप में वृद्धि, बेरोजगारी की समस्या, अमीरी- गरीबी की खाई, नैतिक शिक्षा में कमी आदि ऐसे बिन्दु हैं जिसके कारण शिक्षा का वास्तविक स्वरूप चुनौतियाँ लेकर खड़ा है। इस स्थिति में शिक्षा को सुधारने के उपाय के अन्तर्गत समान शिक्षा व्यवस्था, सरकारी स्कूलों में सुधार, डिजिटल शिक्षा का विस्तार व सरलता, सर्वांगीण कौशल विकास शिक्षा का चलन आदि बिन्दुओं पर बल दिया जाना आवश्यक है।

शिक्षा केवल व्यक्ति के जीवन को ही नहीं बदलती बल्कि पूरे समाज और देश को प्रगतिशील बनाती है। इसलिए हमें शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए और हर व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। एक शिक्षित समाज ही एक सशक्त और विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

किरण मेघवंशी
बी.ए.बीएड., प्रथम वर्ष

जीवन

जीवन एक सुन्दर कहानी, हर पल में छिपी नई रवानी।
कभी धूप है, कभी है छाया, यही है इसका सच्चा साया।
चलते रहना ही इसका धर्म,
रुकना मानो सबसे बड़ा मर्म।
हँसी के पीछे आँसू भी हैं, हर सुख के संग कुछ ग़म भी हैं।
गिरकर उठना, उठकर चलना,
यही है जीवन का असली फलना।
बस यही संदेश है इसका, जी लो हर क्षण दिल से इसका।
हर साँस में बसी है कहानी,
तू ही लेखक, तू ही जुबानी।

नम्रता अग्रवाल
प्रशासनिक विभाग

शोध हिम्मत न हारने का संकल्प है

इंसान की सबसे ख़ास बात उसकी जिज्ञासा होती है। उसे हमेशा कुछ नया जानने और समझने की इच्छा रहती है। यही इच्छा उसे शोध की ओर ले जाती है। मेरे अनुसार शोध सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक ऐसी सोच है जो हमें हर चीज़ को गहराई से समझने और उसके पीछे के कारण जानने के लिए प्रेरित करती है। अगर हम महान लोगों की बात करें तो एलबर्ट आइन्सटीन, थॉमस एडिसन और सी.वी.रमन जैसे लोगों ने अपने शोध के दम पर पूरी दुनिया को नई दिशा दी है। इनकी सबसे बड़ी ख़ासियत यह थी कि इन्होंने कभी हार नहीं मानी और अपने लक्ष्य के लिए लगातार मेहनत करते रहे।

शोध का समाज से गहरा संबंध है। समाज में जो भी बदलाव और विकास होता है, उसके पीछे कहीं न कहीं शोध का ही योगदान होता है। चाहे वह नई तकनीक हो, शिक्षा में सुधार हो या स्वास्थ्य सेवाओं का विकास हर क्षेत्र में शोध की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मेरे हिसाब से शोध हमें यह भी सिखाता है कि सीखने की कोई सीमा नहीं होती। जब समाज के लोग जागरूक और जिज्ञासु होते हैं तो पूरा समाज प्रगति करता है।

आज के समय में तकनीक ने शोध को और आसान बना दिया है। हम इंटरनेट के जरिए घर बैठे बहुत सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन जरूरी यह है कि हम सही और सच्ची जानकारी को पहचाने और उसका सही उपयोग करें ताकि समाज को उसका सही लाभ मिल सके। अंत में मैं यही बताना चाहूँगी कि शोध सिर्फ़ पढ़ाई का हिस्सा नहीं है बल्कि यह हमारी सोच और समाज को बेहतर बनाने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अगर हम सभी जिज्ञासु बनकर सीखते रहें और अपने ज्ञान का उपयोग समाज के हित में करें तो हम एक बेहतर और विकसित समाज का निर्माण कर सकते हैं।

सलोनी विजयवर्गीय
बी.कॉम., द्वितीय वर्ष

शिक्षापा : समाज निर्माण की आधाशिला

शिक्षण एक निष्ठित दायित्व एवं सेवा है। एक शिक्षक बच्चों को सिर्फ़ पढ़ाता ही नहीं बल्कि उन्हें सही रास्ता भी दिखाता है। वह उन्हें अच्छी बातें, संस्कार और जीवन जीने का तरीका सिखाता है। एक अच्छा शिक्षक बच्चों के भविष्य को बनाने में बहुत बड़ा किरदार निभाता है। आज के समय में पढ़ाना और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है क्योंकि टेक्नोलॉजी ऑनलाईन क्लासेज, डिजिटल लर्निंग, ए.आई. जैसी चीजें तेजी से बढ़ रही है ऐसे में शिक्षक का किरदार और भी ख़ास हो जाता है क्योंकि वह विद्यार्थी को सही तरीके से टेक्नोलॉजी का उपयोग करना सिखाता है। एक अच्छा शिक्षक हर बच्चे की रूचि और योग्यता को समझकर उसे आगे बढ़ाने के लिए अभिप्रेरित करता है। शिक्षक बच्चों को सिखाता है कि सही क्या है और गलत क्या है? जीवन में सही फैसले लेने से जीवन की राह सरल हो जाती है एवं इस राह को सफल करने में शिक्षक व शिक्षण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसलिए हमें शिक्षक का सम्मान एवं उनके महत्त्व को समझना चाहिए।

सुहानी विजयवर्गीय
बी.कॉम., द्वितीय वर्ष

शिक्षण, शोध एवं समाज: राष्ट्र निर्माण की स्वर्णिम त्रिवेणी

मानव सभ्यता के विकास की अनंत यात्रा में शिक्षा वह धुरी है जिसके चारों ओर समाज और राष्ट्र की प्रगति का चक्र घूमता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष आलोक में 'शिक्षण' का अर्थ केवल किताबी ज्ञान को आत्मसात करना नहीं रह गया है। वास्तविक शिक्षण वह साधना है जो एक विद्यार्थी के भीतर जिज्ञासा की अग्नि प्रज्वलित करती है और उसे केवल सूचनाओं का संग्रहकर्ता नहीं बल्कि ज्ञान का सृजक बनाती है। जब शिक्षा में नैतिकता और संवेदनशीलता का समावेश होता है तभी एक सजग और समर्थ समाज की नींव पड़ती है।

शिक्षण की इसी जीवंत प्रक्रिया से 'शोध' का जन्म होता है। शोध या अनुसंधान वास्तव में सत्य की निरंतर खोज और समस्याओं के समाधान का मार्ग है। शोध का अर्थ केवल प्रयोगशालाओं के जटिल सूत्रों को सुलझाना नहीं है बल्कि अपने आस-पास की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों के मौलिक समाधान ख़ोजना है। आज भारत को ऐसे शोध की महती आवश्यकता है जो समाज की व्यावहारिक समस्याओं, जैसे-पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो सके। जब एक विद्यार्थी अपनी कक्षा के ज्ञान को अनुसंधान की दृष्टि से देखता है तभी वह नवाचार के जरिए राष्ट्र को नई दिशा देने में सक्षम होता है।

शिक्षा और शोध की अंतिम कसौटी और सार्थकता 'समाज' के सर्वांगीण हित में ही निहित है। यदि हमारा अर्जित ज्ञान समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन नहीं ला सकता तो वह बौद्धिक व्यायाम मात्र रह जाता है। शिक्षण वह बीज है जिसे शोध रूपी जल से सींचा जाता है ताकि एक समृद्ध और समरस समाज रूपी विशाल वृक्ष खड़ा हो सके जिसकी छायां में आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित और संस्कारित महसूस करें। हम विद्यार्थियों का यह परम् कर्त्तव्य है कि हम अपनी शैक्षणिक योग्यताओं का उपयोग केवल व्यक्तिगत करियर और वैभव के लिए नहीं बल्कि सामाजिक सरोकारों के लिए भी करें। जैसा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है कि 'हमारा जीवन केवल अपने लिए नहीं, अपितु समाज के गौरव और राष्ट्र की उन्नति के लिए समर्पित होना चाहिए। जब हमारी शिक्षा का लक्ष्य 'स्व' से ऊपर उठकर 'सर्व' के कल्याण तक पहुँचता है तभी राष्ट्र का वास्तविक उत्थान संभव है।'

सिद्धी सोनी
बी.ए., तृतीय वर्ष

Interdisciplinary Research in English Literature and Social Sciences: An Integrated Approach

Interdisciplinary research has become a vital approach in modern education, especially in the study of English literature and the social sciences. Traditionally, English literature was examined primarily for its artistic and aesthetic value. However, contemporary academic practices emphasize its connection with real-world social, political, and cultural contexts. By integrating social science perspectives, literature becomes a powerful tool for understanding and analysing society.

Literature and social sciences share a deep and natural connection. Literary texts often reflect the social realities, cultural norms, and human experiences of their time. At the same time, social sciences such as sociology, history, and political science aim to study these very aspects in a structured and analytical way. When combined, these disciplines offer a more comprehensive understanding of both texts and the societies they represent. For example, a novel depicting class struggle can be better understood through sociological theories, while historical knowledge helps situate the narrative in its proper context.

Various theoretical frameworks support this interdisciplinary approach. Marxist criticism, for instance, focuses on issues of class, power, and economic conditions in literature. Feminist theory examines gender roles and representation, highlighting issues of inequality and identity. Similarly, postcolonial theory explores the effects of colonialism, cultural identity, and resistance in literary texts. These approaches demonstrate how social science theories can deepen literary interpretation and make it more socially relevant.

The methodology of interdisciplinary research combines elements from both fields. While textual analysis remains central to literary studies, it is often supported by methods such as historical research, cultural analysis, and even qualitative data from social studies. This blend of methods allows researchers to explore literature not just as an isolated form of art, but as a dynamic reflection of society. Comparative analysis is also commonly used to examine how different texts respond to similar social issues.

In the context of teaching, interdisciplinary research has significant benefits. It promotes critical thinking by encouraging students to view literature from multiple perspectives. Instead of simply analysing themes and characters, students learn to connect literary works with broader social issues such as inequality, identity, and globalization. This approach also enhances classroom engagement, as discussions become more relevant to students' lived experiences. Furthermore, it helps students develop research skills by exposing them to diverse sources and methods.

The impact of this interdisciplinary approach extends beyond the classroom. Literature has always played a role in shaping social awareness and challenging dominant ideologies. When supported by social science research, it becomes an even more powerful medium for social critique and change. Literary works often give voice to marginalized communities, while social sciences provide the analytical tools to understand and address these issues. Together, they contribute to the development of a more informed and socially conscious society.

Despite its many advantages, interdisciplinary research also faces certain challenges. One major difficulty lies in balancing the interpretive nature of literary studies with the empirical methods of social sciences. Researchers may also encounter institutional barriers, such as rigid academic structures that separate disciplines. However, these challenges can be overcome through collaboration, openness to diverse methodologies, and a willingness to innovate in research and teaching practices.

In conclusion, interdisciplinary research in English literature and social sciences offers a rich and meaningful way to study both texts and society. It bridges the gap between art and analysis, theory and practice, and education and real-world issues. By adopting this integrated approach, scholars and educators can foster deeper understanding, critical awareness, and social responsibility among students. As the demands of education continue to evolve, interdisciplinary research will remain essential in creating knowledge that is both academically rigorous and socially relevant.

Dimple Jyotiyana, Assistant Professor
Department of English

Role of Mathematics in Teaching, Research and Society

Mathematics plays a fundamental role in education, research, and the development of society. It is not limited to numbers and calculations but involves logical thinking, problem analysis, and systematic reasoning. Through mathematics, students learn to approach problems in an organized and rational manner. The relationship between teaching, research, and society is closely connected, and mathematics acts as a bridge that links these three important areas.

In the field of teaching, mathematics helps students develop important intellectual skills. A good mathematics teacher focuses not only on solving problems but also on helping students understand concepts and their logical foundations. Learning mathematics improves clarity of thought, analytical ability, and reasoning skills. Mathematical statements and conjectures also encourage curiosity and deeper exploration of ideas. As the famous mathematician **Carl Friedrich Gauss** once said, "Mathematics is the queen of the sciences." This statement highlights the central role mathematics plays in understanding many other scientific disciplines. At higher levels of education, teaching mathematics guides students toward independent thinking and creative problem-solving.

Research is another important aspect of mathematics. Mathematicians conduct research to prove conjectures, discover new theories, and establish relationships between different branches of mathematics. Many mathematical ideas have inspired long-term research and intellectual efforts. The great scientist **Galileo Galilei** expressed the importance of mathematics by stating, "Mathematics is the language in which God has written the universe." Through research, mathematics continues to grow as a discipline and contributes to scientific and technological advancements. Mathematical theories often become the foundation for innovations in various fields.

Mathematics also has a strong impact on society. It provides tools for analyzing information, making predictions, and solving practical problems in everyday life. Concepts from statistics, probability, and mathematical modeling are widely used in fields such as economics, engineering, computer science, healthcare, and environmental studies. The philosopher **René Descartes** emphasized the value of mathematical thinking by saying, "Each problem that I solved became a rule which served afterwards to solve other problems." Logical thinking developed through mathematics education helps individuals make informed decisions and approach real-life challenges systematically.

The integration of teaching, research, and societal applications ensures the continuous growth of mathematics. Teaching spreads knowledge and develops critical thinking among students, research expands the boundaries of the subject, and society benefits from the practical applications of mathematical ideas. As **Albert Einstein** famously noted, "Pure mathematics is, in its way, the poetry of logical ideas."

Some important roles of mathematics include:

- Development of **logical reasoning and analytical thinking**
- Improvement of **problem-solving abilities**
- Contribution to **scientific and technological research**
- Applications in **computer science, engineering, and economics**
- Support for **data analysis and decision-making in society**
- Encouragement of **critical and systematic thinking**

In conclusion, mathematics serves as a strong connection between education, research, and societal development. By promoting logical thinking, supporting innovation, and providing practical solutions to real-world problems, mathematics continues to play an essential role in intellectual and social progress. As **Bertrand Russell** beautifully summarized, "Mathematics, rightly viewed, possesses not only truth, but supreme beauty."

Divya Chhatwani
Assistant Professor
Department of Mathematics

Changing roles of women in Indian society through literature

The changing role of women in Bharatian society can be clearly seen through literature. In earlier times, women were mostly shown as quiet, obedient, and dependent on men. They were expected to take care of the family and follow social rules without questioning them. Writers like Rabindranath Tagore and Bankim Chandra Chattopadhyay portrayed women within these limits, but they also gave them inner strength and emotional depth. Slowly, these characters began to think, question, and express their feelings. As society started changing, literature also changed. Women writers began to speak more openly about real issues. Ismat Chughtai wrote boldly about women's desires and social restrictions. Amrita Pritam wrote about love, pain, and the suffering of women during the Partition. Mahasweta Devi focused on poor and tribal women, showing their struggles and strength. These writers helped readers understand that women are not just part of the background—they have their own voices and identities. In modern literature, women are shown as independent and confident. Writers like Anita Desai and Arundhati Roy present women dealing with personal problems, social pressure, and political issues. Their characters try to find their own space in society, make decisions, and sometimes challenge traditions. Along with these famous writers, many unsung and less-known writers have made very important contributions. These writers bring fresh and real stories from different parts of Bharat. Bama in her book Karukku shares the life of a Dalit Christian woman and the discrimination she faces. Baby Kamble in The Prisons We Broke writes about the harsh realities of Dalit women's lives. Urmila Pawar in The Weave of My Life talks about caste, poverty, and gender struggles. Binodini Dasi writes about her difficult life as a theatre artist, and Ashapurna Devi shows women's fight for education and freedom in Pratham Pratishruti. Indira Goswami also presents the emotional struggles of women in traditional societies. These unsung writers are important because they give voice to women who are often ignored—rural women, Dalit women, tribal women, and women from smaller regions. Their stories are simple, honest, and powerful, making literature more meaningful and connected to real life. Bharatian literature shows a clear journey—from silent and dependent women to strong and independent individuals. Today, women in literature are not just characters; they are thinkers, fighters, and decision-makers. The voices of both famous and unsung writers together help us to understand the true changes in women's lives in Bharatian society.

Ms. Kavita Priyadrshni
Assistant Professor, Department of English

Self-Control Emerges Inner Awakening

Self Control is a control exercised over one's self. Self-Control is a wall for ourselves against anger, ego, greediness and temptation. It is the process or habit of having one's emotions, desires, and appetites, senses and mind under control. Self-control is a practice that allows individual to achieve long- term goals, better health and living a quality life. Control your senses and mind allows to reflect self- realization which emanates inner powers that helps to stay focused on spiritual growth. Nowadays, people of young ages are very tempted, having strong desires or worldly desires to get instant gratification; so, self-control acts as defense mechanism, provides long- term satisfaction.

Self-control is a spiritual discipline, stated as "Fruit of the Spirit" and it is a necessary tool for inner purification. Control yourself first, then you can control others.Control yourself is a kind of meditation that keeps mindfulness and reflects our emotions balance. Self-control clears the mind, strengthens will power and judgment. It elevates your character. It gives you freedom, peace, bliss and joy.

Every temptation that is resisted, every evil thought that is overcome, every desire or craving that is destroyed, every wrong action that is checked paves a long way to the attainment of everlasting peace and bliss. Therefore, self-control is the cornerstone of a productive and balanced life. By strengthening this skill, you can achieve long- term goals, happiness and honor. Self-Control gives you power to withstand any problem, to bear suffering and to face danger.

"Control yourself is a blessing that will lead to greater enjoyment of the Lord."

Aastha Arya., M.Sc. Zoology Sem.-1

Beyond the Classroom: When Teaching Meets Research for Society

Education is often regarded as the foundation of national development, and its role in shaping human capital, promoting equality, and fostering societal progress cannot be overstated. Education has long been regarded as the cornerstone of societal development. Traditionally, the classroom has been the central space where knowledge is pass on from teachers to students. The idea of **"Beyond the Classroom: When Teaching Meets Research for Society"** highlights the dynamic relationship between education, inquiry, and social transformation.

The Transforming Role of Teaching:

Teaching today is no longer limited to the delivery of textbook knowledge. Modern educators are expected to cultivate critical thinking, creativity, and problem-solving skills among students. When teaching is linked with research, students gain opportunities to explore new ideas, question existing knowledge, and engage in the process of discovery. This approach transforms students from passive recipients of information into active participants in knowledge creation.

Research as a Tool for Societal Development:

Research plays a crucial role in identifying problems and developing solutions that benefit society. When researchers engage with communities, their work gains practical relevance. For instance, research on agricultural practices can help farmers improve crop yields, while studies in public health can guide policies and about their hygiene, that enhance community well-being.

The Synergy between Teaching and Research:

The connection between teaching and research creates a mutually reinforcing cycle. Involving students in research projects helps them to develop analytical skills and intellectual curiosity. Through fieldwork, surveys and community engagement, students learn how academic knowledge can be applied to real-life situations. This integration prepares them to become responsible citizens and problem-solvers in society.

The integration of teaching and research represents a transformative approach to education. When learning extends beyond the classroom and engages with society, knowledge becomes a force for meaningful change. Ultimately, **when teaching meets research for society, education full-fills its highest purpose, not only to inform minds but also to inspire action and contribute to the betterment of humanity.**

Dr. Udichi Vyas
Assistant Professor, Department of Zoology

*आलेख की मौलिकता का सम्पूर्ण दायित्व लेखकों का ही है-सम्पादक

KNOWLEDGE IS POWER

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज

(P.G. College Affiliated to MDSU Ajmer)

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801

दूरभाष : 01463-257000, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

वेबसाइट : www.rkgirlscollege.edu.in